साहित्य-संगीत-कला को समर्पित
शब्दम्
चरण ६: २००९-१०

शब्द शक्ति की आराधना के लिए

'शब्दम' ध्वनि, नाद और अर्थ तीनों का सम्मिलित रूप है। इसके व्यापक क्षेत्र के अन्तर्गत विविध साहित्य-संगीत-कला स्वत: ही आ जाते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर माँ शारदा की कृपा से १७ नवम्बर २००४ को इस संस्था (शब्दम्) का गठन शिकोहाबाद (उ.प्र.) में हुआ।

उद्देश्य

१. हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि की उच्चस्तरीय रचनाओं और नव लेखन को बढ़ावा देना तथा उपलब्ध साहित्य को जन साधारण के सामने प्रस्तुत करना।

२. विविध भारतीय ललित कलाओं एवम् संगीत को प्रोत्साहित करना।

३. राष्ट्र भाषा हिन्दी के गौरव के लिए प्रयास करना।

४. हिन्दी को शिक्षण और बोलचाल के क्षेत्र में लोकप्रिय बनाना।

५. हिन्दी को रोजी-रोटी प्राप्त करने की भाषा बनाना तथा सब तरह के कारोबार में इसके प्रयोग को बढ़ावा देना।

६. भारत की एकता के लिए हिन्दी की सेवा करना।

सम्पर्क:

शिकोहाबाद: शशिकांत पाण्डेय, अभिषेक श्रीवास्तव

शब्दम् , हिंद लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद – 205141. फोन: (05676)234501/503

ई–मेल: hindlamps@sify.com

मुंबई : टचस्टोन एडवरटाइज़िंग, मुंबई फोन - 022-22826187

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्दम्

चरण ६: २००९-१०

शब्दम् न्यासी मंडल

अध्यक्ष

श्रीमती किरण बजाज

उपाध्यक्ष

प्रो. नन्दलाल पाठक
श्री उदय प्रताप सिंह
श्री सोम ठाकुर

वरिष्ठ सदस्य

श्री शेखर बजाज
श्री मुकुल उपाध्याय

विशिष्ट सलाहकार

श्री बालकृष्ण गुप्त
श्री उमाशंकर शर्मा
डॉ.ओमप्रकाश सिंह
डॉ. ए.के. आहूजा
डॉ. रजनी यादव
डॉ. ध्रुवेंद्र भदौरिया
डॉ. महेश आलोक
श्री मंजरउल वासै
श्री मुकेश मणिकंचन
श्री राजकुमार शर्मा
श्री देवराज गुप्ता

सज्जा

टचस्टोन एडवरटाइज़िंग, मुंबई

समन्वय

शशिकांत पाण्डेय • अभिषेक श्रीवास्तव
अभय दिक्षित • प्रफुल्ल फडके • आशा जोशी

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्दम्

अनुक्रम

अध्यक्षीय निवेदन 3

नुक्कड़ नाटक : 'बेटी आई है' 4

ग्रामीण कृषक कवि सम्मेलन 6

प्रकृति एवं संस्कृति 10

सचल पुस्तक मेला 11

स्वर गंगा 13

प्रतियोगिताओं का आगाज़ 14

शिक्षक दिवस 15

कार्तिक मास का महत्व 18

स्थापना दिवस समारोह 21

प्रश्न मंच 28

अन्य गतिविधियों का चित्रण 31

गीतिका बजाज की चित्र प्रदर्शनी 32

मुख पृष्ठ :

गीतिका बजाज की नवीनतम चित्र प्रदर्शनी 'शेड्स ऑफ नेचर' की कुछ कृतियां (विस्तृत रिपोर्ट अंतिम पृष्ठों पर)।

अध्यक्षीय निवेदन

शब्दम् वार्षिकी का षष्टम् अंक आपके हाथों समर्पित करते हुए मुझे संतोष का अनुभव हो रहा है। इसमें शब्दम् की वर्ष भर की गतिविधियों और कार्यक्रमों की झांकी है।

इस वर्ष की यात्रा में शब्दम् ने अपने उद्देश्यों में कितनी सफलता पायी, इसका आकलन तो आप सब को ही करना है – मैं तो सिर्फ इतना कह सकती हूँ कि शब्दम् ने अपने प्रयासों को पूरी संवेदनशीलता और ईमानदारी से अंजाम दिया है। १७ नवम्बर २०१० को 'स्थापना दिवस' का आयोजन अविस्मरणीय और अद्वितीय रहा। हिन्दी भाषी प्रदेश में मराठी भाषी हिन्दी सेवी न्यायमूर्ति धर्माधिकारीजी और हिन्दी साहित्य समीक्षक चन्द्रकान्त बांदिवडेकरजी का सम्मान कर शब्दम् गौरवान्वित हुआ।

इस बार एक और मराठी नाट्य संस्था 'स्त्री मुक्ति संगठन' द्वारा नुक्कड़ नाटक 'बेटी आई है' का मंचन शब्दम् ने शिकोहाबाद और सिरसागंज में संस्थाओं और गाँवों में करवाया।

शिक्षक–दिवस पर शिक्षकों का सम्मान और हिन्दी– दिवस पर जनपद के सभी प्रमुख पत्रकारों का सम्मेलन आयोजित कर आज की पत्रकारिता को साहित्य, कला और संस्कृति के प्रति जवाबदेह बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की गई।

पूर्व की भाँति शब्दम् के प्रश्नमंच कार्यक्रम ने स्कूली बच्चों के बीच पहुँच दिल्ली से शिकोहाबाद तक अपनी अलग पहचान बना ली है ।

पुस्तक परिक्रमा और ग्राम्यकवि सम्मेलन के द्वारा शब्दम् ने अधिकाधिक लोगों तक पहुँचने का कार्य किया।

कार्तिक के महत्व पर गुरुदेव श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री का व्याख्यान एक अलग ही सात्विक प्रयास रहा।

शब्दम् के कार्यक्रमों को सुचारु रूप से संयोजित, संगठित और क्रियान्वित करने में शशिकांत पाण्डेय, सुरजीत सिंह, अभिषेक श्रीवास्तव, जगतनारायण व आशा जोशी के प्रयास विशेष उल्लेखनीय हैं।

श्री मंज़रउल वासै जिस लगन तथा एकात्मता से शब्दम् के हिंदी प्रश्न मंच कार्यक्रम का संचालन व प्रसार कर रहे हैं, वह अभिनंदनीय है।

किरण बजाज

नुक्कड़ नाटक श्रृंखलाः 'बेटी आई है'

- **कार्यक्रम विषयः** नुक्कड़ नाटक : बेटी आई है
- **दिनांकः** 26–28 फरवरी, 2010 • **स्थानः** शिकोहाबाद, सिरसागंज व बटेश्वर
- **संयोजनः** शब्दम् एवं स्त्री मुक्ति संगठन, मुम्बई
- **आमंत्रित कलाकारः** राजश्री पण्डित, वृन्दा गोडसे, सीमा मोरे, सरिता घाड़गे, राम दल्वी, दत्ता बोरिवले, माधुरी दीक्षित आदि।

शब्दम् एवं स्त्री मुक्ति संगठन, मुम्बई के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'नुक्कड़ नाटक : बेटी आई है' का मंचन शिकोहाबाद नगर के स्टाफ क्लब, ज्ञानदीप पब्लिक सी.सेके. स्कूल, यंग स्कॉलर्स एकेडमी व सिरसागंज के इन्दिरा मेमोरियल पब्लिक स्कूल, ब्राइट स्कॉलर्स एकेडमी एवं बटेश्वर में किया गया।

नाटक ने समाज में स्त्रियों के प्रति व्याप्त अन्याय, शोषण और दहेज आदि कुरीतियों पर नृत्य संगीत एवं व्यंग्य की विधाओं के माध्यम से करारा प्रहार किया। इनके अभियान का उद्देश्य समाज में स्त्रियों की दशा सुधारना तथा समान अधिकार दिलाना है। क्योंकि आज इतनी प्रगति कर लेने के बाद भी हमारे समाज में कन्या से ज्यादा पुत्र के

सिरसागंज के ब्राइट स्कॉलर्स एकेडमी में 'बेटी आई है' का नाट्य मंचन प्रस्तुत करती स्त्री मुक्ति संगठन की सदस्यगण

जन्म पर खुशी मनाई जाती है, हर घर में यही कामना की जाती है कि पुत्र की ही प्राप्ति हो। यह अपने कार्यक्रम से समाज की इस सोच को बदलने का प्रयास कर रहे हैं कि आज जब स्त्री पुरूष से किसी भी क्षेत्र में कम नहीं है तो उसे इस समाज में पुरुषों के बराबर स्वतंत्रता व अधिकार मिलने चाहिए।

स्त्री मुक्ति संगठन सुश्री ज्योति म्हापसेकर के निर्देशन में संचालित कामकाजी महिलाओं व पुरूषों का संगठन है जो कि अपने निजी जीवन के दायित्वों के निर्वहन के साथ–साथ समाज सुधार के कार्य में भी लगे हैं। स्त्री मुक्ति संगठन अभी तक पूरे भारतवर्ष में दो हजार से अधिक नाटकों की प्रस्तुतियाँ दे चुका है।

ज्योति बहन इन नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से सचमुच समाज की कुरीतियों का पर्दाफ़ाश कर रही हैं.

सुश्री ज्योति म्हापसेकर का स्वागत

ग्रामीणों ने किया काव्यरस का रसास्वादन

- **कार्यक्रम विषयः** ग्रामीण कृषक कवि सम्मेलन
- **दिनांकः** 13 जून, 2010 • **स्थानः** ग्राम झमझमपुर, शिकोहाबाद
- **संयोजनः** शब्दम्
- **आमंत्रित कविगणः** ओमपाल सिंह 'निडर', कुंवरपाल सिंह 'भंवर', बदन सिंह 'मस्ताना', सुरेश चौहान 'नीरव', मुन्नालाल 'सौरभ' एवं सुश्री व्यंजना शुक्ला।

शब्दम् ने काव्य रसधारा को ग्रामीणों के बीच 'ग्रामीण कृषक कवि सम्मेलन' के माध्यम से प्रवाहित किया। इस कवि सम्मेलन का आयोजन शिकोहाबाद क्षेत्र के ग्राम झमझमपुर के श्री हनुमान मन्दिर में किया गया। मुख्य अतिथि पूर्व सांसद श्री उदयप्रताप सिंह की गरिमामयी उपस्थिति में यह कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा।

कार्यक्रम का शुभारम्भ सुश्री व्यंजना शुक्ला द्वारा सरस्वती वंदना 'वीणा के तार बजाती नहीं तुम' से हुआ। कवि श्री कुंवरपाल सिंह 'भंवर' ने भ्रूण हत्या एवं परिवार नियोजन पर अपनी हस्ताक्षर कविताओं का पाठ किया। कवि बदन सिंह 'मस्ताना' ने अपनी कविता 'बूढ़े विश्वामित्रों का आशीष ज़रूरी है'' तथा किसानों एवं गांव पर अपनी शिखर कविता 'शहरों की तुलना में आज भी लगते हमको गांव सुहाने'' एवं मैनपुरी से पधारे कवि सुरेश चौहान 'नीरव' ने अपनी कविता 'मोहे नौकरिया शहर की न भावै, पिया अपने गांव चले आवौ'' एवं 'अब बदल गये हैं गांव मेरे'' पढ़ श्रोताओं को गांव की बदलती हुई तस्वीर दिखाई।

बेवर के ग्रामीण हास्य कवि मुन्नालाल 'सौरभ' ने अपनी हस्ताक्षर कविता 'मोबाइल', 'गुइयां तुम्हें गांव घुमाऊँ', एवं पर्यावरण पर अपनी कविता 'उजड़ रही है भूमि आज चारों ओर सब वन बाग सब भारी पेड़ कटवाये हैं' पढ़ श्रोताओं की खूब वाहवाही लूटी। तत्पश्चात् कार्यक्रम में एकमात्र कवयित्री सुश्री व्यंजना शुक्ला ने देश पर अपनी कविता 'हमारा देश अब कितना पतन की ओर जायेगा?' के माध्यम से उपस्थित श्रोताओं को चिन्तन करने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम का संचालन कर रहे डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने भी विशेष आग्रह पर अपनी स्वास्थ्य सम्बन्धी रचना 'जियो जगत के हित सदा, सकारात्मक सोच', का पाठ किया। तत्श्चात् कार्यक्रम के वरिष्ठ कवि एवं पूर्व सांसद ओमपाल सिंह 'निडर' ने पर्यावरण पर अपनी रचना 'पर्यावरण से करोगे यदि खिलवाड़, तो कहीं पै बाढ़, कहीं सूखा पड़ जायेगा' पढ़ ग्रामीणों को पर्यावरण संरक्षण व वृक्षारोपण का संदेश दिया।

अन्त में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, वरिष्ठ कवि, पूर्व सांसद व शब्दम् उपाध्यक्ष श्री उदयप्रताप सिंह ने अपनी रचना 'ऐसे नहीं, संभलकर बैठो, तुम हो पहरेदार वतन के' का पाठ किया।

कार्यक्रम अध्यक्ष उमाशंकर शर्मा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में शब्दम् के कार्यों पर प्रकाश डाला। डा. ओ.पी. सिंह ने शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती बजाज का संदेश पढ़कर सुनाया–'शब्दम्' जन मानस से कोई भी स्वार्थजनित अपेक्षा नहीं रखती, पर 'शब्दम्' चाहती है कि हिन्दी भाषा, संस्कृति और साहित्य जन–जन तक पहुँचे। भारत का आम आदमी अपनी राष्ट्रभाषा के लालित्य और ऊँचाई को सुने। भाषा द्वारा ही संस्कृति पनपती है, बड़े–बड़े कवि, लेखक, विचारक अच्छे विचारों में संवेदनशीलता का सृजन कर जनसाधारण को असाधारण बना देते हैं।

कार्यक्रम में शब्दम् सलाहकार समिति सदस्यगण श्री उमाशंकर शर्मा, डा. ओ.पी. सिंह, डा. ए.के आहूजा, श्री मंज़रउल वासै, पूर्व प्राचार्य नारायण महाविद्यालय श्री एस.के.एस. चौहान, जी.सी. चतुर्वेदी सहित ग्राम झमझमपुर, बैरई, नगला सुन्दर, डाहिनी आदि गांवों के निवासी अच्छी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम में ग्रामवासी राहुल यादव (एडवोकेट), अनिरुद्ध सिंह, जितेन्द्र सिंह, जगत सिंह एवं शब्दम् की ओर से शशिकान्त पाण्डेय, सुरजीत सिंह, अभिषेक श्रीवास्तव, जगत नारायण, अजय आदि ने सक्रिय सहयोग दिया।

शेर :

''शब्दम् ने सदा प्रतीक्षा की है जीवन के उजियारों की।
कर्तव्यों का बोध रहा है, चाह नहीं अधिकारों की।''

कुंवरपाल 'भंवर'
ग्राम–सिंहपुर, पो.आ. विजयगढ़, अलीगढ़
मो. 9412564137

मुक्तक :

''उजड़ रही है भूमि आज चारों ओर सब
वन बाग सब भारी पेड़ कटवाये हैं।
बैठे कहाँ और कहाँ घुसिला बनावै,
बिजली के लट्ठा और टावर लगाये हैं।
कहाँ दुखड़ा सुनावैं मेरो भोजनऊ छीड़
लयो मानव के भूखे नाई पेट भरपाये हैं।
अर गिद्ध चारों ओर खूब बढ़ गये हैं
इसीलिए छोड़ के विदेश चले आये हैं।।''

–मुन्नालाल 'सौरभ'

पर्यावरण बचाना है

हवा, धूप, पानी सबका ही, क्षरण बचाना है।
जीवन का धूमिल होता, व्याकरण बचाना है।
ज्ञान और विज्ञान सभी संदेश दे रहे हैं।
ईश्वर की अनुपम कृति, पर्यावरण बचाना है।
ये नदियाँ ये पर्वत, घाटी हैं बकवास नहीं
इनके अभाव में, सुखमय जीवन की आस नहीं।
यें चिड़ियाँ जंगली जानवर, सब उपयोगी हैं।
भाँति–भाँति के वृक्ष बनाये, हमें निरोगी हैं।
सबकी रक्षा करनी हमको सबसे नेह निभाना है।
कण–कण तृण के समझौते, पर संसार टिका है।
विधि विधान रचने वाले ने सब कुछ सही रचा है।।
ये वर्षा से सर्दी गर्मी सब संतुलन बनाये।
ये आँधी तूफान प्राण नव हमको नित्य जुटाये।
सबके ही स्वागत में हमको शीश झुकाना है।।

बदन सिंह 'मस्ताना'
पडुआ रोड, भोगाँव, मैनपुरी

चयनित रचनाएं

अब बदल गये हैं गांव मेरे

आदमी में प्रेम नहीं, न्याय और नेम नहीं,
झगड़ते हैं, सांझ और सवेरे,
अब बदल गये हैं गांव मेरे।
जाने अब कहां गईं वो दादी की कहानियां,
एक राजा था, थीं और तीन उनकी रानियां,
पनघटों पे अब नहीं हैं गगरी लिए गोरियां,
नन्हें मुन्हें सो रहे बिना सुने ही लोरियां,
घूमते हैं रात में लुटेरे,
अब बदल गये हैं गांव मेरे।
हो रही है मोरी और पनारे की लड़ाइयां,
एक दूसरे के बीच खुद गयी हैं खाइयां,
आम रास्तों को रोक टोककर अकड़ रहे,
व्यर्थ में मुकद्दमें कचहरियों में लड़ रहे,
चुगल कर रहे हैं रोज फेरे,
अब बदल गये हैं गांव मेरे।
दूसरों के दुख से अब दुखी न कोई हो रहा,
दूसरों का चैन देख अपना चैन खो रहा,
भाई–भाई से लड़ रहे हैं एक खेत के लिए
रात दिन वे मर रहे हैं अपने पेट के लिए,
भइया मुहं फुलाये हैं चचेरे,
अब बदल गये हैं गांव मेरे।
बेटों को चिन्ता है सिर्फ अपने आप की,
सुन नहीं रहा है कोई बूढ़े मां–बाप की,
छोटा भाई किस्मत से लग गया है फौज में,
पत्नी साथ में है खूब रह रहा है मौज में,
भइया हुए भावज के चेरे,
अब बदल गये हैं गांव मेरे।
कीमत कम हो गयी है पीपल की छांव की,
मुर्गे की बांग और कागा की कांव की,
चाल और चलन में अब पुरानी रीति न रही,
होली के मिलन में पहले जैसी प्रीति न रही,
राजनीति कर रहे घसेरे,
अब बदल गये हैं गांव मेरे।

सुरेश चौहान 'नीरव' गीतकार
महेशानन्द नगर कुरावली; मैनपुरी

जयवाणी

पीड़ाओं के सागर में डूबी अमराई,
अब कौन यहां पर गीत मिलन के गायेगा,
पाषाणों में खो गई प्रकृति की हरियाली,
अब कौन यहां पर गीत सुमन के गायेगा।
सोचा अधरों पर फूल खिलेंगे खुशियों के,
ऋतुराज यहां आते–आते ही सहम गया,
जो भी आया अंगारों की बरसात लिये,
मन का बन्धन भी हो कितना बेरहम,
अर्थी डोली में कोई भी अन्तर न रहा,
अब कौन यहां पर गीत लगन के गायेगा।
जब से लोगों ने धूप बांध ली मुटठी में,
इस घुटन भरे कोलाहल से जी ऊब गया,
अपनी संस्कृति चौराहों पर नीलाम हुई,
जग का नाविक मीठे सपनों में डूब गया,
हो रहे उपेक्षित हैं स्वर वेद ऋचाओं के,
अब कौन यहां पर गीत लगन के गायेगा।
तरूणाई झंझावातों की उलझन में है,
पश्चिमी गन्ध अन्तरमन में रस घोल गई,
शरमायी झिझकी लाज भरी दुल्हन लेकिन
वाचाल हवा पूनम का घूंघट खोल गई,
पौरूष ही सुरा सुन्दरी में मदहोश हुआ,
अब कौन यहां पर गीत सृजन के गायेगा,
पीड़ाओं के सागर में डूबी अमराई।

व्यंजना शुक्ला
साउथ सिटी, रत्नाकर खण्ड, रायबरेली रोड, लखनऊ, उ.प्र.
मो. 9415270177, 9839069169

दतेई गांव के ग्रामीणों सुना काव्यपाठ

'कारवां जब शहीदों का घर को चला...'

अमर उजाला ब्यूरो

- साहित्यिक शब्दम संस्था ने कराया आयोजन
- संस्था द्वारा कवियों को सम्मानित किया गया

एटा। ग्राम दतेई में मंगलवार को साहित्यिक संस्था शब्दम के तत्वावधान में कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि राजकुमार सचान ने मां सरस्वती के चित्र पर दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

इस दौरान संस्था ने कवियों को सम्मानित किया। राजकुमार सचान को गुरुश्रेष्ठ, उमाशंकर मिश्र को गणेश शंकर विद्यार्थी, शिवसागर को रघुवीर सिंह सम्मान, प्रताप दीक्षित को रामबाबू सम्मान, सुरेश नीरव को रतन सिंह सम्मान, मुन्नालाल को मां गायत्री रामबेटी सम[illegible] हरपाल सिंह को शब्दम [illegible] विभूषित किया गया। कवि[illegible] सचान ने कवि[illegible]

[illegible] सुन लेंगे...। अपर जिलाधिकारी अलीगढ़ अखिलेश मिश्र ने कहा कि कारवां जब शहीदों का घर को चला, [illegible] आने लगीं हिचकियां...। [illegible] प्रताप दीक्षित ने लोक [illegible]। उन्होंने [illegible]

ज्यादा...। बलराम सरस ने कहा दुनियां का कोई धर्म देश से बड़ा नहीं...। शिवसागर का गीत ऐसे यमुना के पानी में झांको नहीं, संगमरमर की तबियत मचल जाएगी। अन्य कवियों में सुरेश चौहान नीरव, मुन्नालाल सौरभ, अक्षय प्रताप, ओमऋषि भारद्वाज, डा. सुधीर पालीवाल प्रमुख थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता लखनऊ के साहित्यकार हरपाल सिंह ने की। संचालन डा. धुवेंद्र भदौरिया ने किया। संयोजक विनेश चौहान ने आगंतुकों का [illegible]ार जताया।

'शहरों के सापेक्ष आज भी सुहाने लगते हैं गांव'

शब्दम् संस्था की ओर से ग्राम झमझमपुर में आयोजित किया गया कवि सम्मेलन

हिन्दुस्तान संवाद

शिकोहाबाद

बजाज ग्रुप की निदेशिका द्वारा संचालित साहित्य-संगीत-कला को समर्पित संस्था शब्दम् ने सोमवार को कृषक कवि सम्मेलन का आयोजन किया। इसमें कई स्तरीय कवियों ने भाग लिया। ग्राम झमझमपुर के हनुमान मंदिर में [illegible] में काव्य रसधार [illegible] अतिथि पूर्व [illegible] सिंह थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ व्यंजना शुक्ला ने सरस्वती वंदना से किया। कवि बदन सिंह मस्ताना ने 'शहरों की तुलना में आज भी लगते हैं हमको गांव सुहाने' कविता का पाठ कर श्रोताओं की वाहवाही लूटी। वरिष्ठ कवि उदय प्रताप सिंह ने अपनी रचना-'ऐसे नहीं संभलकर बैठो, तुम हो पहरेदार वतन के' का पाठ किया। अन्य कवियों में कुंवरपाल सिंह 'भंवर', सुरेश चौहान 'नीरव', मुन्नालाल 'सौरभ', ओमपाल सिंह 'निडर' ने भी काव्य पाठ किया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. धुवेन्द्र सिंह भदौरिया ने किया। अध्यक्षीय भाषण में उमाशंकर शर्मा ने संस्था के कार्यों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम को सफल बनाने में हिन्द लैंपस के सहायक महाप्रबंधक बीएन गुप्ता, शशिकांत पांडेय, डॉ. एके आहूजा, एसकेएस चौहान, डॉ. ओपी सिंह, जीसी चतुर्वेदी, अभय दीक्षित, सुरजीत सिंह आदि का विशेष योगदान रहा।

ऐसे नहीं संभलकर बैठो तुम हो पहरेदार वतन के

ग्रामीण कृषक कवि सम्मेलन [illegible]

[illegible]सेलन में मंचासीन कवि।

[illegible] तुलना में आज भी लगते हमको गांव सुहाने। कवि कुंवर पाल सिंह भंवर ने भ्रूण हत्या परिवार नियोजन पर कविताओं का पाठ किया। पालीवाल कालेज के प्राचार्य डा. ओपी सिंह ने शब्दम की अध्यक्ष श्रीमती किरन बजाज के संदेश पढ़कर सुनाया। [illegible] सरस्वती वंदना [illegible] डा. एके आहूजा ने पर्यावरण मित्र का परिचय कराया। उमाशंकर शर्मा ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। संचालन डा. धुवेन्द्र भदौरिया व धन्यवाद ज्ञापन शशिकांत पांडे ने दिया। अतिथियों का स्वागत हिन्द लैम्पस के सहायक महा प्रबंधक बिन्देश्वरी गुप्ता ने हरित कलश भेंटकर किया। इस कवि सम्मेलन में झमझमपुर, बैरई, [illegible] सुंदर, डाहिनी आदि गांवों के श्रोता उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कवि उदय प्रताप सिंह ने की।

[illegible] एवं गुइयां तुम्हें गांव घुमाऊं [illegible] मैनपुरी के कवि सुरेश [illegible] 'मोहे नौकरिया शहर [illegible] गांव चले आवौ'। अब बदल गये हैं गांव मेरे पढ़कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कवि बदन सिंह मस्ताना ने कहा: बूढ़े बिरवाओं का आशीष जरूरी है। शहरों की [illegible]

'पुरुषत्व नहीं यदि दिल्ली में, हुंकार कहां से सुन लेंगे'

- ग्राम दतेई में कवि सम्मेलन आयोजित

एटा, निज प्रतिनिधिः निकटवर्ती ग्राम दतेई में बीती रात कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कवि सम्मेलन में आस पास गांवों के सैकड़ों श्रोता काव्य रचनाओं का रसास्वादन लेने के लिए देर तक डटे रहे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सीडीओ एवं साहित्यकार राजकुमार सचान होरी थे। जबकि अध्यक्षता लखनऊ से आये साहित्यकार हरपाल सिंह ने की। होरी को गुरुश्रेष्ठ सम्मान से विभूषित किया गया। दीप प्रज्ज्वलन के साथ कवि सम्मेलन का उद्घाटन किया गया।

साहित्यिक संस्था शब्दम के तत्वावधान में आयोजित कवि सम्मेलन में कवि राजकुमार सचान होरी ने भदौरिया के सम्मान में दोहा पढ़ा 'कवि ध्रुवेन्द्र देखा लिखा, जिला-जिला पर नाम, दतेई कवि भूमि को होरी करे प्रणाम'।

उन्होंने आगे कहा कि 'पुरुषत्व नहीं यदि दिल्ली में हुंकार कहां से सुन लेंगे, पुरुषत्व हीन के प्रांगण में झनकार कहां से सुन लेंगे'। एडीएम अलीगढ़ अखिलेश मिश्र ने अपनी गजल में सुनाया 'कारवां जब शहीदों का घर को चला, घर में अम्मा को आने लगी हिचकियां, कुछ कटे हाथ हैं, कुछ कटी उंगलियां, ताज की नींव से रिस रही सिसकियां'। वरिष्ठ कवि प्रताप दीक्षित ने लोकभाषा में रचना सुनाई 'जैसे भी हैं जितने भी हैं, भाव हमारे अपने हैं, हमने किसी और के कपड़े धोकर नहीं निचोड़े हैं'। ओजस्वी गीतकार बलराम सरस ने जोशीला काव्य पाठ किया 'दुनियां का कोई धर्म देश से बड़ा नहीं, इसीलिए देश वंदना के गीत गाता हूं'। गीतकार शिवसागर ने श्रृंगार की मर्यादित पंक्तियां पढ़ीं 'ऐसे यमुना के पानी में झांको नहीं, संगमरमर की तबियत मचल जायेगी, गोरे मुखड़े से घूंघट हटाओ नहीं, खूबसूरत इमारत पिघल जायेगी'। सुरेश चौहान नीरव ने कहा कि 'अब पहले जैसे नहीं रहे गांव मेरे, राजनीति कर रहे घरों'। इसी क्रम में मुन्नालाल सौरभ, डा. सुधीर पालीवाल, अक्षयप्रताप, डा. ओमऋषि भारद्वाज ने भी काव्य पाठ से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। इस अवसर पर प्रताप दीक्षित को रामबाबू स्मृति सम्मान, शिवसागर को रघुवीर सिंह स्मृति सम्मान, सुरेश नीरव को गायत्री, रामबेटी स्मृति सम्मान तथा मुन्नालाल सौरभ को रतन सिंह चौहान सम्मान से विभूषित किया गया।

यूएसएम पत्रिका सम्पादक उमाशंकर मिश्र को गणेशशंकर सम्मान से विभूषित किया गया। इस दौरान आर.एस. सिसौदिया, कन्हैयालाल एड., डा. आर.के. सिंह, जमशेद आलम पत्रिकार कानूनगो समाजसेवी राकेश गांधी को भी सम्मानित किया गया। इस अवसर पर जगन्नाथ सिंह भदौरिया, रामलड़ैते शर्मा, ओमवीर सिंह, हरनाम सिंह सहित अनेक प्रतिष्ठित लोगों के प्रति ग्राम प्रधान विनेश कुमार चौहान ने आभार व्यक्त किया।

ग्राम दतेई में पर्यावरण सम्मेलन होने के पश्चात कवि सम्मेलन में बदल गया। देर रात तक श्रोताओं ने कवि सम्मेलन का लुत्फ उठाया।

ग्राम झमझमपुर में ग्रामीण कृषक कवि सम्मेलन आयोजित

[illegible]मोहे नौकरिया शहर की न भावै...'

- [illegible]श्रोताओं ने बजाई तालियां, कवियों ने लूटी वाहवाही

अमर उजाला

[illegible] साहित्य-संगीत कला को समर्पित [illegible] तत्वावधान में काव्य रसधारा को [illegible] ग्रामीण कृषक कवि सम्मेलन के [illegible]त किया गया। कवि सम्मेलन का आयोजन ग्राम झमझमपुर, के श्री हनुमान मंदिर में किया गया। मुख्य अतिथि पूर्व सांसद उदय प्रताप सिंह थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ व्यंजना शुक्ला द्वारा सरस्वती वंदना वीणा के तार बजाती नहीं तुम से हुआ। इस अवसर पर कवि कुंवरपाल सिंह भंवर ने गणेश वंदना, भ्रूण हत्या एवं परिवार नियोजन पर अपनी कविताओं का पाठन किया। कवि बदन सिंह मस्ताना ने अपनी कविता- शहरों की तुलना में आज भी लगते हमको गांव सुहाने प्रस्तुत की। मैनपुरी से आए कवि सुरेश चौहान नीरव ने अपनी कविता मोहे नौकरिया शहर की न भावै, पिया अपने गांव चले आवौ पढ़कर तालियां बटोरीं। बेवर के ग्रामीण हास्य कवि मुन्नालाल सौरभ ने अपनी कविता ऊजड़ रही है भूमि आज चारों ओर सब वन बाग सब भारी पेड़ कटवाए हैं पढ़ श्रोताओं की खूब वाहवाही लूटी। कार्यक्रम का संचालन कर रहे डा. ध्रुवेंद्र भदौरिया ने अपनी स्वास्थ्य संबंधी रचना जियो जगत के हित सदा सकारात्मक सोच प्रस्तुत की। वरिष्ठ कवि और पूर्व सांसद ओमपाल सिंह निडर ने कहा, पर्यावरण से करोगे अगर खिलवाड़, तो कहीं पे बाढ़, कहीं सूखा पड़ जाएगा पढ़ ग्रामीणों को पर्यावरण संरक्षण और पौधारोपण का संदेश दिया। अंत में पूर्व सांसद उदय प्रताप सिंह ने अपनी रचना- ऐसे नहीं संभलकर बैठो, तुम हो पहरेदार वतन के। का पाठ किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष उमाशंकर शर्मा ने शब्दम के कार्यों पर प्रकाश डाला। डा. ओपी सिंह ने शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज के संदेश को पढ़ा, जिसमें कहा कि शब्दम् जनमानस से कोई भी स्वार्थ जनित अपेक्षा नहीं रखती पर शब्दम् चाहती है कि हिंदी भाषा संस्कृति और साहित्य जन-जन तक पहुंचे।

ग्राम झमझमपुर में ग्रामीण कृषक कवि सम्मेलन में कविता का पाठ करती कवियत्री।

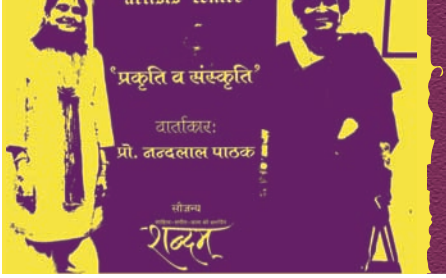

प्रकृति और संस्कृति

महानगर मुंबई की विशिष्ट संस्था 'आर्टिस्ट्स सेंटर तथा शब्दम् के संयुक्त तत्वावधान में २४ जून २०१० को प्रकृति और संस्कृति विषयक वार्ता का आयोजन किया गया। भारी वर्षा के कारण वार्ताकार प्रो नन्दलाल पाठक नहीं पहुंच सके। सेंटर की अध्यक्ष सुप्रसिद्ध चित्रकार प्रफुल्ला डहाणुकर के आग्रह पर शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज ने विषय प्रवर्तन करना स्वीकार किया। प्रस्तुत हैं श्रीमती बजाज के विचार

''ऐसे आयोजन में अच्छी बात यह है कि यहाँ बुद्धिजन और अच्छे लोग आपस में मिलें और इस तरह के विषय पर चर्चा करें।

'संस्कृति' और 'प्रकृति'– ये दो चीजें अगर बच जायें तो मुझे लगता है कि और कुछ करने की कोई आवश्यकता ही नहीं है. और इसीलिये 'पर्यावरण मित्र' और 'शब्दम्' का जन्म हुआ, शब्दम् संस्कृति को लेकर और पर्यावरण मित्र पर्यावरण को लेकर। कोई भी देश अपनी भौगोलिक सीमाओं से नहीं जाना जाता। वह जाना जाता है अपने प्राकृतिक सौंदर्य से। अपनी संवेदनाओं से। अपनी कलात्मकता से। अपने साहित्य और ज्ञान से। यही कारण है कि भारतवर्ष में संपूर्ण संसार से लोग हमारी कला और संस्कृति को पहचानने के लिए आते हैं।

रामायण, महाभारत एवं अनेकानेक साहित्य का सृजन प्रकृति की गोद में ही बैठकर हमारे ऋषि–मुनियों ने किया है। हमारी संस्कृति का मूल आधार है हमारे पुरखों का संस्कार। यह संस्कार ही तो है जिससे हमें प्रेरणा मिलती है और हमारे लोग दुनिया के हर कोने में सफलता पा रहे हैं।

सब सीखों का निचोड़ है –'संस्कृति'। इसके बिना कोई भी देश समृद्ध नहीं हो सकता।

श्रीमती प्रफुल्ला डहाणुकर का अभिनन्दन करतीं शब्दम अध्यक्ष

प्रकृति और संस्कृति का आपस में बड़ा ही गहरा संबंध है। यदि हमारी प्रकृति प्रदूषित होगी तो हमारी सोच भी संकुचित होती जाएगी। और हम अपनी संवेदना खो देंगे। हमें पाश्चात्य के पीछे भागना छोड़कर अपनी धरोहर को बचाना होगा।

ज्ञान का भण्डार– आपके द्वार

- **कार्यक्रम विषयः** सचल पुस्तक मेला
- **दिनांकः** 27–28 जुलाई, 2010 • **स्थानः** शिकोहाबाद व सिरसागंज
- **संयोजनः** शब्दम् एवं नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया।

शब्दम् एवं मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्त संस्था नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 27 एवं 28 जुलाई, 2010 को शिकोहाबाद एवं सिरसागंज में सचल पुस्तक मेला का आयोजन किया गया। जिसमें हिन्दी साहित्य के साथ–साथ, मुंशी प्रेमचन्द के उपन्यास, बाल साहित्य, रोचक कहानियाँ, विज्ञान, विधि, पर्यावरण की जानकारी से भरपूर एवं मनोरंजक पुस्तकों का प्रदर्शन किया गया।

कुछ वर्ष पहले बच्चे मनोरंजन के लिए किस्से–कहानियों वाली किताबों को खूब पसन्द करते थे, लेकिन बदलते युग में मनोरंजन के साधनों में तेजी से बदलाव आये और किताबों की जगह वीडियो गेम एवं एनिमेशन ने ले ली। बच्चों को फिर से साहित्य की ओर प्रेरित करने के लिए शब्दम् की ओर से साहित्य सेवा के लिए किया गया यह प्रयास काफी सराहा गया। दिनांक 27 जुलाई, 2010 को शिकोहाबाद नगर के ज्ञानदीप

शिकोहाबाद में सचल पुस्तक परिक्रमा

पब्लिक स्कूल व यंग स्कॉलर्स एकेडमी में विद्यार्थियों ने पुस्तकों का अवलोकन किया। तत्पश्चात् नारायण होटल चौराहे पर पुस्तक मेला लगाया गया, जहाँ आमजन में साहित्य का प्रचार व प्रसार हुआ। नगर के प्रबुद्ध लेखक श्री पुन्नी सिंह सहित कई बुद्धिजीवियों एवं गण्यमान्यों ने इस पुस्तक मेले से बहुत सी पुस्तकें खरीदीं एवं शब्दम् द्वारा किये गये इस प्रयास की भूरि–भूरि प्रशंसा की। शाम के समय यह पुस्तक मेला हिन्द लैम्प्स परिसर में लगाया गया।

दिनांक 28 जुलाई, 2010 को यह पुस्तक मेला कस्बा सिरसागंज में लगा। इसके बाद यह मेला सोथरा चौराहा, सिरसागंज पर लगाया गया। जहाँ लोगों ने बहुत ही रूचि से पुस्तकों का अवलोकन किया।

नेशनल बुक ट्रस्ट की ओर से यह सचल पुस्तक मेला प्रतिवर्ष पूरे भारत में भ्रमण करता है। जिसका उद्देश्य हिन्दी साहित्य को जन–जन तक पहुँचाना है। 'शब्दम्' के प्रयासों से यह पुस्तक मेला कस्बाई क्षेत्रों में लगाया गया, जो बहुत ही सफल रहा। 'शब्दम्' द्वारा साहित्य सेवा व ज्ञानवर्द्धन के ऐसे प्रयास भविष्य में जारी रहेंगे।

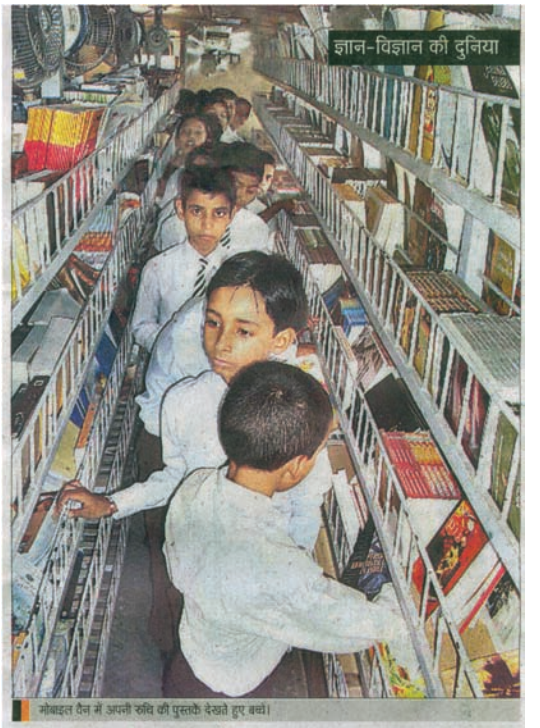

ज्ञान-विज्ञान की दुनिया

मोबाइल वैन में अपनी रुचि की पुस्तकें देखते हुए बच्चे।

ज्ञान-भंडार लेकर आया 'शब्दम्'

अमर उजाला ब्यूरो

कई विद्यालयों में पहुंची पुस्तक मेला की वैन

सिरसागंज। बच्चों की पुस्तकों में अभिरुचि पैदा करने के लिए सामाजिक संस्था 'शब्दम्' ने चलता-फिरता पुस्तक मेला विद्यालयों पर पहुंचाया। बच्चों ने भी मोबाइल वैन पर सजे अनोखे पुस्तक मेले का खूब आनंद लिया।

कुछ साल पहले बच्चे मनोरंजन के लिए किस्से-कहानियों वाली किताबों को खूब पसंद करते थे, लेकिन बदलते युग में मनोरंजन के साधनों में भी तेजी से बदलाव आये और किताबों की जगह वीडियो गेम, टीवी पर आने वाली कार्टून फिल्मों ने ले लिया। बच्चों को फिर से किताबों की ओर मोड़ने का प्रयास समाजसेवी संस्था शब्दम् ने किया है। पुस्तकों के असीम भंडार को एक मोबाइल वैन पर पुस्तक मेले के रूप में बच्चों के समक्ष प्रस्तुत किया। पुस्तकों से भरी मोबाइल वैन बुधवार की सुबह सिरसागंज के इटावा रोड स्थित आइडियल पब्लिक स्कूल पर पहुंची। वैन और शब्दम् के सदस्यों का स्वागत करने के लिए आइडियल पब्लिक स्कूल के प्रबंधक देश दीपक गुप्ता और प्रधानाचार्य अंजली गुप्ता द्वारा एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पालिकाध्यक्ष डा. राघवेंद्र सिंह ने वैन का फीता काटकर वैन का द्वार खोला। बच्चों ने पुस्तक मेले से कहानियों, किस्सों और चुटकुलों की खूब किताब खरीदी। बाद में यह वैन नगर के ब्राइट स्कालर्स अकेडमी गांधी मंडी स्थित श्रीराम शरण विद्या निकेतन पर पहुंची। वहां भी बच्चों ने इस पुस्तक मेले से खूब खरीददारी की। बच्चों को जानकारी देने के लिये शब्दम् के कार्यकारी अधिकारी शशिकांत पाण्डेय, मंजर उलवास्य और सुरजीत सिंह साथ में थे।

शिकोहाबाद पुस्तक मेले में अपनी जिज्ञासा शांत करते स्कूली बच्चे

'जीवन बदल देती हैं पुस्तकें'

नेशनल बुक ट्रस्ट ने वैन के माध्यम से सचल पुस्तक मेला का आयोजन किया

हिन्दुस्तान संवाद

सिरसागंज

पुस्तकों से बच्चों का जीवन बदल सकता है। अगर अभिभावक उनका ध्यान टीवी आदि से अलग कर पुस्तकों में लगा देते हैं तो देश का आने वाला कल सुनहरा होगा।

नगर में सचल पुस्तक मेला का शुभारंभ करते हुए पालिकाध्यक्ष राघवेंद्र सिंह ने पुस्तकों की महिमा का बखान किया। बुधवार को दिल्ली की नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा यहां वैन के माध्यम से सचल पुस्तक मेला का एक दिवसीय आयोजन किया गया था। आइडियल पब्लिक स्कूल से शुरू हुआ सचल पुस्तक मेला नगर के कई स्थानों व विद्यालयों में पहुंचा। बच्चों को ज्ञान विज्ञान की पुस्तकों से परिचित कराया। मोबाइल वैन में हिन्दी और अंग्रेजी के साहित्य के अलावा मनोरंजन और ज्ञानवर्द्धन की बालोपयोगी पुस्तकें भी हैं। बच्चों के साथ साथ अध्यापकों एवं अभिभावकों ने भी पुस्तक खरीदने में पूरा उत्साह दिखाया। इस मौके पर देशदीपक गुप्ता, संजय शर्मा, देवशरण आर्य, संजीव वर्मा, मंजर उल वासे, शशिकांत पांडे, सुरजीत सिंह आदि लोग प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

मोबाइल वैन के रूप में लगे पुस्तक मेले में पुस्तकों का अवलोकन करते छात्र।

पूर्णिमा चौधरी ने बहाई स्वर गंगा

- **कार्यक्रम विषयः** स्वर गंगा
- **दिनांकः** 26 अगस्त, 2010 • **स्थानः** शिकोहाबाद
- **संयोजनः** शब्दम् एवं स्पिक मैके • **आमंत्रित कलाकारः** श्रीमती पूर्णिमा चौधरी

शब्दम् एवं स्पिक मैके के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम 'स्वर गंगा' में विश्वविख्यात विदुषी श्रीमती पूर्णिमा चौधरी द्वारा ठुमरी, टप्पा, दादरा, कज़री आदि गायन प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम का आरम्भ श्रीमती पूर्णिमा चौधरी ने ठुमरी 'मोरा सइयाँ बुलावै आधी रात, नदिया बैरी भई' से किया। इसके बाद टप्पा ''साडा दुःख में

शिकोहाबाद के संस्कृति भवन में स्वर की गंगा बहाती श्रीमती पूर्णिमा चौधरी

साँई भूल जावै....' जो कि पंजाब की शैली है, को बनारसी अंदाज में गाया। दादरा शैली में उन्होंने 'भीगी जाऊँ मैं पिया बचाये रहियो...' व बनारसी कज़री 'सिया संग झूले बगिया में राम ललना....'' सुनाकर श्रोताओं को रसमय कर दिया। तत्पश्चात् श्रोताओं के विशेष आग्रह पर श्रीकृष्ण पर भजन 'झूला धीरे से झुलावो बनवारी' सुनाया। उनके मुख से निकलने वाली स्वर लहरियाँ इतनी रसमय थीं कि श्रोताओं का मन उसमें डूब गया।

कार्यक्रम का संचालन डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने किया एवं शब्दम् की ओर से शशिकान्त पाण्डेय, अभिषेक श्रीवास्तव, जगत नारायण आदि ने कार्यक्रम में महती सहयोग दिया।

''ठुमरी''

ठुमरी, उपशास्त्रीय भारतीय संगीत की प्रेममयी विधा है। जिसमें स्त्री प्रेम के लिए भगवान् श्रीकृष्ण के लिए गीत गाती हैं। इसके गीत मुख्यतः उत्तर प्रदेश की बोलियों, हिन्दी, बृजभाषा एवं पूर्वी में होते हैं व अधिक से अधिक लचीलेपन के साथ एक ही राग ठुमरी की विशेषता है।

नई दिल्ली में 'शब्दम्' ने किया प्रतियोगिताओं का आगाज़

- **कार्यक्रम विषयः** हिन्दी प्रश्न मंच व पुरस्कार वितरण कार्यक्रम
- **दिनांकः** 5 अगस्त, 2010 व 31 अगस्त, 2010 • **स्थानः** राजकीय गर्ल्स सी.सेके. स्कूल, बिजवासन, नई दिल्ली • **संयोजनः** शब्दम्

शब्दम् ने अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार करते हुए नई दिल्ली के राजकीय गर्ल्स सी.सेके. स्कूल, बिजवासन में हिन्दी निबन्ध लेखन एवं प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन किया।

हिन्दी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 5 अगस्त को किया गया, इसका विषय था ''बढ़ती जनसंख्या का पर्यावरण पर दुष्प्रभाव''। इस प्रतियोगिता में कक्षा 9 से 12 की 211 छात्राओं ने भाग लिया। इसके बाद दिनांक 31 अगस्त 2010 को शब्दम् द्वारा हिन्दी प्रश्न मंच एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

हिन्दी प्रश्न मंच में कक्षा 9 से 12 की लगभग 400 छात्राओं ने भाग लिया। 'शब्दम्' सलाहकार समिति सदस्य श्री मंज़रउल वासै ने हिन्दी भाषा व साहित्य सम्बन्धी प्रश्न बहुत ही रोचक ढंग से पूछे और छात्राओं का ज्ञानवर्धन किया। अन्त में विद्यालय की बालिकाओं द्वारा श्रीमती जयन्ती के निर्देशन में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त 'योग प्रदर्शन' कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

निबन्ध प्रतियोगिता में कु. मुशर्रत ज़हाँ ने प्रथम, कु. राखी ने द्वितीय, मोनिका सिंह व श्वेता राणा ने संयुक्त तृतीय एवं अंजू व मनीषा ने संयुक्त सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

कार्यक्रम के सफल आयोजन में प्रधानाचार्या श्रीमती रवीन्द्र वढ़ेरा, उपप्रधानाचार्या श्रीमती शशि सिंह एवं सभी शिक्षिकाओं सहित बजाज इलेक्ट्रिकल्स के अधिकारी श्री एन.सी. गुप्ता एवं शब्दम् समन्वयक सुरजीत सिंह ने सक्रिय सहयोग दिया।

प्रश्न पूछते हुए श्री मंज़र उलवासै

राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त 'योग प्रदर्शन' कार्यक्रम की प्रस्तुति

अच्छे गुरू दुर्लभ हैं.... शिक्षक दिवस पर शिक्षकों का सम्मान

- **कार्यक्रम विषयः** शिक्षक सम्मान समारोह एवं शिक्षक एवं शिक्षा के महत्व विषयक संगोष्ठी
- **दिनांकः** 5 सितम्बर, 2010 • **स्थानः** शिकोहाबाद • **संयोजनः** शब्दम्

शब्दम् द्वारा शिक्षक दिवस पर 'शिक्षक सम्मान समारोह एवं शिक्षक तथा शिक्षा के महत्व' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की आवश्यक औपचारिकताओं के बाद विभिन्न विद्यालयों/महाविद्यालयों से पधारे प्रधानाचार्यों श्रीमती रेखा, डा. आर.के. सिंह, श्रीमती सीमा यादव, श्री रवीन्द्र पाल सिंह, श्रीमती रेखा गुप्ता, श्री ओम प्रकाश, श्रीमती सुमनलता द्विवेदी, श्रीमती वन्दना तिवारी, श्री राजीव यादव व श्रेष्ठ शिक्षकों श्री उमेश कुमार, डा. आदित्य कृष्ण सिंह चौहान, डा. कप्तान सिंह यादव, श्री संजीव भारद्वाज, श्रीमती पुष्पा कुलश्रेष्ठ, श्री उत्तम सिंह राठौर, श्रीमती कमल श्रीवास्तव, श्री श्रीप्रकाश, श्री ऋषिकान्त वर्मा, श्री सन्दीप यादव, कु. पिन्की यादव श्री उमेश कुमार को मंचासीन गणमान्यों ने हरित कलश, शिक्षण सामग्री व स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

संगोष्ठी का शुभारम्भ करते हुए सलाहकार समिति

शिक्षक दिवस पर डा. ओ.पी. सिंह का सम्मान करती श्रीमती किरण बजाज

सदस्य श्री मंज़रउल वासै ने डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवन पर प्रकाश डाला। शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने अपने वक्तव्य में कहा कि '' आप सभी शिक्षकगण आज जिस तरह के माहौल में शिक्षण दे रहे हैं वह वास्तव में प्रशंसनीय है और आप सब इसके लिए साधुवाद के पात्र हैं। हम जानते हैं कि आज आपके सामने बहुत सी कसौटियाँ हैं किन्तु मेरा मानना है कि शिक्षक कभी हार नहीं मान सकता। क्योंकि वह तो युग निर्माता – राष्ट्र निर्माता है।'' साथ ही उन्होंने शिक्षा क्षेत्र में बढ़ती विसंगतियों व शिक्षा के बाजारीकरण पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ''आज शिक्षा का मूल्य घट रहा है और उसकी कीमत बढ़ रही है। गुणवत्ता कम हो गई है और शिक्षा केवल डिग्री व नम्बर तक सीमित रह गई है।'' उन्होंने अब्राहम लिंकन के पत्र के स्वरचित भावानुवाद का वाचन किया, जो कि उन्होंने अपने पुत्र के शिक्षक को लिखा था। यह पत्र अपने आप में प्रत्येक शिक्षक के लिए प्रेरणास्रोत है।

इसके बाद नारायण महाविद्यालय के प्राचार्य डा. जे.एस.पी. द्विवेदी ने अपने अनुभवों को बताते हुए अथर्ववेद के मंत्र –

अमन्त्रम् अक्षरम् नास्ति, नास्ति मूलम् अनौषधम्।
अयोग्य पुरूषः नास्ति, योजकः तत्र दुर्लभः।।

का हिन्दी में अनुवाद कर बताया कि,
''ऐसा कोई अक्षर नहीं है जिससे कोई सुन्दर मंत्र न बनता हो, ऐसी कोई वनस्पति नहीं है जिसमें कोई औषधीय गुण न हो और संसार में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसमें कोई योग्यता न हो, लेकिन संसार में अच्छे शिक्षक दुर्लभ हैं''।

हिन्द लैम्प्स के कार्यकारी निदेशक श्री सुदीप नायगांवकर ने अपने वक्तव्य में कहा कि ''हम मान रहे हैं कि हमारी शिक्षण संस्थायें ठीक से काम नहीं कर रही हैं, लेकिन हमारे शिक्षक को की गुणवत्ता कम नहीं हुई है। इसका उदाहरण है कि हार्वर्ड बिजनिस स्कूल के चीफ भी एक भारतीय हैं। विद्यार्थी के भविष्य को बनाने का दायित्व एक शिक्षक का होता है।''

अमेरिका के प्रसिद्ध और सबसे प्रशंसनीय राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने अपने पुत्र के शिक्षक को एक पत्र लिखाः

1.मेरे पुत्र को यह जानना होगा कि सब मनुष्य न्यायपूर्ण और सच्चे नहीं हैं, परन्तु उसको सिखाइये कि हर चालाक व्यक्ति के पीछे भी एक हीरो है। हर स्वार्थी राजनीतिज्ञ के पीछे भी एक त्यागपूर्ण नेता है और हर शत्रु के पीछे भी एक मित्र है।
2.मैं जानता हूं कि समय लगेगा लेकिन उसे जरूर सिखाइये कि पाँच रूपये पाने से एक रूपया कमाया हुआ ज्यादा बेहतर है।
3.उसको सिखाइये, जीवन में हार को किस तरह से समझा जाये और विजय का आनन्द कैसे उठाया जाये।
4.उसे हमेशा ईर्ष्या से बहुत दूर रहने की शिक्षा दीजिएगा।
5.उसे शान्तिपूर्वक हँसने का राज़ बताइये।
6.उसे सिखाइये कि स्वार्थी दबंग से दूर रहना सबसे सरल है।
7.हो सके तो उसे सिखाइये सुन्दर किताबों का

चमत्कार और साथ ही उसे दीजिए शान्त वातावरण, जहाँ वो आकाश में उड़ती चिड़िया, सुबह गुंजन करते हुए भंवरे और हरी पहाड़ी पर खिले फूलों के अद्‌भुत रहस्य का चिन्तन कर सके।

8. उसे बताइयेगा कि स्कूल/कॉलेज में नकल करने से फेल हो जाना सम्माननीय है।

9. अपनी अच्छी सोच पर निष्ठा रखे और दूसरों के कहने पर गलत रास्ते पर न जाये।

10. उसे सिखाइये कि नम्र लोगों के साथ नम्र और कठोर के साथ कठोर बने।

11. मेरे पुत्र को आत्मबल दीजिए कि वह भेड़ों में भेड़ बनकर न रहे, बल्कि अपनी अलग पहचान बनाये।

12. उसे सिखाइये कि सबकी सुने और उसे सत्य की कसौटी पर कस कर वही ग्रहण करे, जो सत्य है।

13. उसे सिखाइये कि जब वह उदास हो तो कैसे हँस सके? आँखों में आँसू लाना कोई शर्म की नहीं है। उसे बताइये कि बहुत ज्यादा मीठा बोलने वाले एवं चापलूसों से सावधान रहे।

14. उसे सिखाइये कि अपने ज्ञान और शक्ति को बड़े बोली लगाने वाले को बेच दे, लेकिन कभी अपने हृदय और आत्मा की कीमत न लगा दे।

15. बिना मतलब चिल्लाने वाली भीड़ पर ध्यान न दे, किन्तु मुद्‌दा अगर सही है तो उसके लिए खड़ा रहे और उसके लिए लड़े।

16. मेरे पुत्र से बहुत स्नेह रखें किन्तु उसे बिगाड़ें नहीं, क्योंकि सोना तप कर ही कुंदन बनता है।

17. उसे साहसी होने का धैर्य के साथ अधीर होने का बल भी सिखाइये। अपने ऊपर निःस्वार्थ विश्वास रखे, जिससे दूसरों के निःस्वार्थ विश्वास पर भी उसे विश्वास होगा।

यह बहुत बड़ी मांग है किन्तु आप जरूर देखिएगा कि आप क्या कर सकते हैं? मेरा पुत्र अच्छा, छोटा और अबोध बालक है।''

शब्दम ने किया शिक्षकों का सम्मान

शिक्षा के महत्व पर संगोष्ठी

राष्ट्र का मस्तिष्क और रीढ़ हैं शिक्षक : किरण बजाज

आह्वान

पितरों की स्मृति में प्रत्येक व्यक्ति को एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए

कार्तिक महीने का आध्यात्मिक महत्व

मनुष्य के लिए गृहस्थ आश्रम श्रेष्ठ है। 'धन्यो गृहस्थ आश्रम' – गृहस्थ आश्रम चारों आश्रम में श्रेष्ठ है। गृहस्थ आश्रम में रहकर ही मनुष्य अपनी पूर्ण रूप से उन्नति कर सकता है और इसीलिए हमारे ऋषि मुनियों ने इन पर्वों, त्योहारों के माध्यम से आध्यात्मिकता का सरलीकरण किया है।

कार्तिक माह का आध्यात्मिकता की दृष्टि से बहुत अधिक महत्व है। आश्विन मास की शरद पूर्णिमा के पश्चात ही कार्तिक मास का आरम्भ हो जाता है।

कार्तिक मास की चतुर्थी करवाचौथ कहलाती है। इस दिन भारतीय हिन्दू स्त्रियाँ अपने पति के स्वास्थ्य और लम्बी आयु के लिए व्रत करती हैं। इसका सकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभाव खास कर पति की भावनाओं पर सहज ही पड़ जाता है, क्योंकि जब पत्नी अपने पति के लिए इतनी उच्च भावना से व्रत करती है तो पति का प्रेम होना स्वाभाविक है। इसी तरह पति पत्नी के परस्पर प्रेम से दाम्पत्य जीवन की नींव पक्की होती है और जहाँ दाम्पत्य जीवन की नींव मजबूत होती है, दाम्पत्य जीवन सुखी रहता है। जहाँ दाम्पत्य जीवन और गृहस्थ जीवन सफल होते हैं वहीं आध्यात्मिकता जड़ पकड़ सकती है।

कार्तिक मास के आठवें दिन होई का पर्व आता है। जिस दिन होई देवी की पूजा की जाती है, जो संतान के लिए की जाती है।

कार्तिक के तेरहवें दिन धनतेरस का दिन आता है, जिस दिन धन्वन्तरि की पूजा होती है। भगवान धन्वन्तरि आयुर्वेद के प्रवक्ता भी है। शुद्ध अन्न और पानी अमृत ही हैं। उनके सेवन से शरीर, बुद्धि और मन तीनों स्वस्थ बनते है। उस दिन कुबेर की भी

संस्कृति भवन, हिन्द परिसर में कार्तिक मास के महत्व पर व्याख्यान देते हुए श्रीकृष्णचन्द्र शास्त्री (ठाकुरजी) व आनन्द लेते नर–नारी

पूजा होती है। भावार्थ यह है कि जब तन, मन, और बुद्धि शुद्ध होगी तो धन तो आयेगा ही।

चतुर्दशी के दिन अनन्त भगवान का पूजन होता है। इसलिए उसे अनन्त चतुर्दशी कहते हैं। चिन्तन तो अनन्त का ही होना चाहिए। संसार का चिन्तन तो चिन्ता बन जाती है।

फिर आती है दीपावली की अमावस्या। जब प्रभु श्रीराम लक्ष्मण और सीता के साथ 14 वर्ष बाद वापस आये और यही वह दिन है, जब अमावस्या की अंधेरी रात भी असंख्य दीपों से जगमगा उठती है। उसी दिन श्री लक्ष्मी जी कमल के फूल पर प्रगट हुयी थीं। यही कारण है कि दीपावली की रात लक्ष्मी का पूजन होता है। क्योंकि जहाँ मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम रहेंगे, लक्ष्मी आयेंगी और जहाँ श्री गणेश विवेक रूप में रहेंगे, वहॉ लक्ष्मी स्थिर रहेंगी। यह दिन भगवान राम के गुणों के चिन्तन, मनन और अराधना का भी है। जब अयोध्या रूपी हृदय में राम प्रभू का दीपक जलेगा, तभी हमारा जीवन मंगलमय होगा। क्योंकि हृदय का वास्तविक आनन्द तो राम चिन्तन में ही है।

दीपावली का दूसरा दिन नववर्ष व गोवर्धन पूजा का है। गोवर्धन पूजा का अर्थ है, प्रकृति संरक्षण। जब हम ईश्वर के रूप प्रकृति को संरक्षित रखेंगे तो हम स्वस्थ भी रहेंगे और धन की वर्षा भी होगी। हमारा शरीर भी पाँच तत्वों का बना है क्षिति, जल, पावक, गगन समीरा और इसी कारण पृथ्वी, जल,

बनारस में कार्तिक पूर्णिमा के दिन प्रत्येक घाट पर भक्तजन असंख्य दीपक जलाकर जल में प्रवाहित करते हैं

अग्नि, वायु और आकाश की शुद्धता से ही गोवर्धन पूजा हो सकती है।

अमावस्या के दूसरे दिन भाई दूज का पावन पर्व आता है। जहाँ भाई–बहन के पवित्र सम्बन्ध की पवित्रता और मिठास का आनन्द मिलता है। इस तरह आध्यात्मिक और सामाजिक ताने–बाने में हमारा गृहस्थ जीवन बुना हुआ है।

एक ओर इंगित है कि जब हम सम्बन्धों से प्यार नहीं कर सकते, तो प्रभु से क्या प्यार करेंगे?

अमावस्या के आठवें दिन गोपाष्टमी के दिन कामधेनु का जन्म हुआ था। हमारी संस्कृति में गऊ का बहुत अधिक महत्व है क्योंकि जीवन पर्यन्त हम गऊ के दूध से पुष्ट बनते हैं। गाय हमारी संस्कृति की अनमोल धरोहर हैं।

अष्टमी के बाद अक्षय नवमीं व आँवला नवमी आ जाती हैं। इसे अक्षय नवमी इसलिए कहते हैं क्योंकि उस दिन एक बार प्रभु का नाम हृदय से लेने से अनन्त गुना फल प्राप्त होता है। ऐसा भी कहा जाता है कि अक्षय नवमी के दिन शुभ संकल्प और व्रत करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

फिर देवोत्थान एकादशी आती है, उस दिन सालिग्राम और तुलसी का विवाह होता है। इसकी एक लम्बी कहानी है। कार्तिक का महीना पूरा होता है– कार्तिक पूर्णिमा से उस दिन देवताओं की दीपावली होती है। इस दिन दीपक जलाकर जल में प्रवाहित करने की प्रथा है। कार्तिक पूर्णिमा में पूजा पाठ और दीप प्रज्वलन की प्रथा है। बनारस में कार्तिक पूर्णिमा के दिन प्रत्येक घाट पर भक्तजन असंख्य दीपक जलाकर जल में प्रवाहित करते है। शंख व घंटों की आवाज के बीच गंगाजी की आरती की जाती है।

इस तरह सम्पूर्ण कार्तिक मास सामाजिक, धार्मिक और आध्यात्मिक मास है। महत्वपूर्ण बात यह है कि इन व्रत, मास, धर्म, त्योहार की सिर्फ ऊपरी बातों को महत्व न देकर उसमें निहित महत्व और सार को समझ कर मनुष्य को अपने अन्तिम लक्ष्य को ढूँढ़ लेना चाहिए।

देव - दीवाली, बनारस

घाट - घाट पर दीप जले थे
व्योम पर था पूनम का चाँद
मन्त्र आरती से भरपूर
गंगा - लहरियों पर दीप मचले थे
प्रेम - निसर्ग का यह कैसा रूप
हर घाट पर 'देव' खड़े थे!

कार्तिक पूर्णिमा

पूर्ण - चन्द्र किरणों से आज
नहा रहा था अनंत सागर
भूलकर गंभीर सीमाएँ
गा रहा था असीम सागर
उज्ज्वल प्रेम में गोते खाकर
डूब रहा था अथाह सागर
भावनाओं के कगार पर
बुला रहा था प्रशान्त सागर
मेरे अनमने खंडित मन को
मना रहा था अखंड सागर!

- किरण बजाज

शिकोहाबाद में आयोजित शब्दम् का छठा स्थापना दिवस

पाखंड करने से नहीं बचेगी हिन्दी की गरिमा

शब्दम् के स्थापना दिवस समारोह में हिन्दी की गरिमा और वर्तमान दशा पर चिंतन के साथ दो वरिष्ठ साहित्यकारों को सम्मानित किया गया।

स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए शब्दम् की अध्यक्ष किरण बजाज ने शब्दम् के कार्यों और हिन्दीसेवी सम्मान के बारे में बताते हुए मुख्यअतिथिद्वय का परिचय दिया।

'जो सर से लेकर पैरों तक खुद्दार नहीं है उसको कलम पकड़ने का अधिकार नहीं है' कविता की इन पंक्तियों के माध्यम से उदयप्रताप सिंह ने हिन्दी की गरिमा के विषय पर अपनी राय रखी। डा. महेश आलोक ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए नगर के साहित्यकारों की ओर से धर्माधिकारी और बांदिवडेकर के प्रति आभार प्रकट कर इस समारोह को अविस्मरणीय बताया। समारोह का कुशल संचालन मुकेश मणिकांचन ने किया।

हिन्दी विश्व की विराट भाषा है। उसकी ऐतिहासिक गरिमा को याद करके खुश और गौरवान्वित हुआ जा सकता है, लेकिन उसके वर्तमान का सवाल पूरी तरह से सिर उठाये खड़ा है। अगर वर्तमान नहीं सुधरा तो भविष्य चौपट हो जायेगा। शब्दम् के छठे स्थापना समारोह को संबोधित करते हुए साहित्यकारों ने हिन्दी के लिये अधिकाधिक काम किये जाने की आवश्यकता पर बल दिया।

हिन्द लैम्प्स के स्टाफ क्लब भवन में आयोजित स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर मुख्यअतिथिद्वय पूर्व न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी और वरिष्ठ साहित्यकार चंद्रकांत बांदिवडेकर ने अपने विशिष्ट नजरिये से हिन्दी पट्टी के लोगों को सोचने के लिये विवश कर दिया। प्राध्यापकों, साहित्यकारों और विचारकों की सभा में धर्माधिकारी के इस संबोधन के बाद सन्नाटा छा गया कि आमलेट पर गंगाजल

छिड़कने जैसे पाखंडों से हिन्दी की दशा नहीं सुधर सकती। कवि सम्मेलनों के मंच हों या सत्यनारायण की कथा, अगर ऐसे आयोजनों को पेट भरने से जोड़ा जायेगा तो उनकी गरिमा खंड–खंड हो जायेगी। पद्मभूषण सम्मान के अलावा अनेक सम्मान और पुरस्कारों से नवाजे जा चुके धर्माधिकारी ने कहा कि हिंदी की दुर्दशा के लिये हिंदी वाले ही ज़िम्मेदार हैं। उन्होंने सरकारी प्रयासों को पाखंड की संज्ञा दी और भाषाओं के आंतरिक संपर्कों को मजबूत किये जाने की बात पर भी बल दिया। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र में भाषा की बजाय लिपि का असमंजस लोगों में बना हुआ है। लेकिन इन मुद्दों पर झंझट करने से देश का ही नुकसान होता है।

विख्यात हिन्दी–मराठी साहित्यकार डा. चंद्रकांत बांदिवडेकर ने हिन्दी की गरिमा के विषय पर उसकी ऐतिहासिक सदस्यता के उल्लेख से अपनी बात शुरू की। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद के रंगभूमि और गोदान जैसे उपन्यास और कहानियों के गरीब, दबे–कुचले पात्र हिन्दी की गरिमा हैं। अगर हिन्दी ने उन्हें अपनी कहानियों का नायक नहीं बनाया होता तो आज देश का वह तबका सामाजिक विकास में कई वर्ष पीछे होता। इस भाषा का यही गौरव है कि इसने समाज की पंक्ति में सबसे पीछे खड़े व्यक्ति पर अपनी नजर रखी। बांदिवडेकर ने हिन्दी की विषय वस्तु से लेकर उसके भाव और कला पक्ष की तारीफ करते हुए चिंतन की सूक्ष्म और आधुनिक दृष्टि तक की बात कही।

सम्मान करते हुए स्वयं सम्मानित हुआ शब्दम्। शिकोहाबाद याद रखेगा इन क्षणों को दाराशिकोह की ऐतिहासिक नगरी में बुद्धिजीवियों और साहित्यकारों को बेसब्री से प्रतीक्षा थी 17 नवंबर

पूर्व न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी और वरिष्ठ साहित्यकार चंद्रकांत बांदिवडेकर को हिन्दीसेवी सम्मान से सम्मानित करते हुए श्री उदयप्रताप सिंह

को होने वाले शब्दम् के स्थापना दिवस समारोह की। अचानक खराब हुए मौसम के बावजूद चंद्रशेखर धर्माधिकारी और चंद्रकांत बांदिवडेकर को सुनने के लिये जनपद भर के प्रमुख बुद्धिजीवी और साहित्य मर्मज्ञ जुटे। इन सब के लिये दो विशेष विभूतियों की उपस्थिति के कारण यह समारोह अविस्मरणीय बन गया।

डॉ. चन्द्रकान्त बांदिवडेकर की आलोचना दृष्टि

– डॉ. महेश आलोक

चन्द्रकान्त बांदिवडेकर हिन्दी एवं मराठी साहित्य के समर्थ आलोचक के रूप में प्रख्यात हैं। साहित्य में प्रचलित तमाम खेमेबन्दी से अलग, वादों–प्रतिवादों से दूर चुपचाप साहित्य साधना में रत डॉ. बांदिवडेकर ने आलोचना के लिए अपने प्रतिमान खुद गढ़े हैं। रचना के प्रति तत्वग्राही दृष्टि, एक अनिवार्य रचनात्मक संवेदनशीलता, सर्जनात्मक कृति को केन्द्र में रखकर 'पाठ केन्द्रित आलोचना' के साथ ही ऐतिहासिक विवेक और 'स्वतन्त्रता' जैसे बड़े मानवीय मूल्य के साथ खड़े होने का दुर्लभ साहस, जातीय और प्रतिबद्ध लेखन के प्रति पूर्वाग्रहरहित उदार दृष्टि, रचना के यथार्थ और उसके कलात्मक सौन्दर्य को रचनाकार की आस्था के साथ समझने की कोशिश, यथार्थ सम्प्रेषण की बुनियादी समस्याओं को संरचनात्मक तथा संवेदना की बनावट और बुनावट के स्तर पर पकड़ने की सार्थक पहल– यह सब डा. बांदिवडेकर की सजग आलोचना का अनिवार्य हिस्सा है।

डॉ. बांदिवडेकर की आलोचना दृष्टि किसी कृति की स्थूल प्रासंगिकता को नकारती है क्योंकि कृति की ताकत उसकी द्विविधात्मक प्रकृति में निहित होती है। रचनात्मक आलोचना इसीलिए निर्णय नहीं लेती, निर्णय लेने की प्रक्रिया में संघर्ष और साहस जैसे बड़े जीवनमूल्य की ओर उन्मुख कर देती है। उनका आलोचक इसी समझ का इस्तेमाल करता हुआ रचना के भीतर बहुवस्तुस्पर्शी संवेदना और स्वभाव को अपनी आलोचना का प्रमुख हथियार या 'औजार' बना लेता है। उनका स्पष्ट मानना है कि ''समीक्षा का आधार यही नहीं होना चाहिए कि समीक्ष्य कृति से किस तात्कालिक प्रयोजनीयता की सिद्धि हो रही है, बल्कि यह होना चाहिए कि जीवन के जिस पक्ष को रचनाकार ने प्रस्तुत करना चाहा है, उसमें कहाँ तक सफल हुआ है। होमर और शेक्सपीयर की श्रेष्ठता के जो निष्कर्ष हैं, टॉलस्टाय, बालज़ाक या गोर्की के लिए वे उपयुक्त न होंगे। इसी प्रकार आधुनिक साहित्य की समीक्षा सरणियों से वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, भास या तुलसीदास का मूल्यांकन नहीं हो सकता। इसलिए साहित्य समीक्षा में ऐतिहासिक दृष्टि, आलोचनात्मक विवेक और मर्मस्पर्शी सहृदयता का सम्यक समन्वय होना

आवश्यक है।''

डॉ. बांदिवडेकर की समीक्षादृष्टि व्यापक, उदार और समावेशी है तथा आलोचना, अस्मिता और अभिव्यक्ति की तलाश का सशक्त माध्यम। उनकी आलोचना रचना में सामाजिक यथार्थ को लेकर व्याप्त सरलीकरणों, रूमानियत और राजनैतिक भोलेपन और नैतिक संवेदनहीनता के विरूद्ध लगातार संघर्ष है। वे साहित्य में स्मृतिहीनता का निरंतर निषेध करते हैं। इसी निषेध से यह मूल्य–दृष्टि विकसित होती है कि बड़ा साहित्य देश और काल का अतिक्रमण करता हुआ हमारे अपने समय में भी उतना ही प्रासंगिक हो उठता है, जितना अपने रचना काल के समय था। इस अर्थ में डॉ. बांदिवडेकर की आलोचनतात्मक दृष्टि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हजारीप्रसाद द्विवेदी और अज्ञेय की आलोचना दृष्टियों का रासायनिक प्रतिफलन है।

इसी रासायतिक प्रतिफलन से वह मौलिक दृष्टि निःसृत होती है, जिसके आधार पर वे पूरे भारतीय साहित्य में अटूट जीवनधर्मिता, जीवनानुभूति की समग्रता, गहनता और व्यापकता को लक्षित कर पाते हैं, जो एक दूसरे स्तर पर भारतीय संस्कृति की अटूट पहचान भी है।

और अन्त में डॉ. बांदिवडेकर की आलोचना की एक जरूरी और उल्लेखनीय विशेषता की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगा, बल्कि इसे रेखांकित करना चाहूँगा अर्थात उसकी पठनीयता और प्रेषणीयता को, जो हमें अज्ञेय, रामविलास शर्मा, अशोक वाजपेयी, देवीशंकर अवस्थी की आलोचना का स्मरण करा जाती है। वह है उनकी सघन, प्रखर, आत्मीय, और धूमिल की तरह सूक्तिपरक नाटकीय भाषा, जहाँ पारिभाषिक शब्दावली और चमकदार वाक्यविन्यास के साथ सहजता का चमत्कारिक प्रभाव दुर्लभ संयोग की तरह उपस्थित है।

सांस्कृतिक एवं राजनैतिक जागरण के प्रतीक न्यायमूर्ति चन्द्रशेखर धर्माधिकारी

– डॉ. महेश आलोक

प्रख्यात गाँधीवादी चिंतक, पदम्भूषण न्यायमूर्ति चन्द्रशेखर धर्माधिकारी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में न्यायनिष्ठता, आचरणगत शुचिता तथा गाँधीवादी मूल्यों की समकालीन प्रासंगिता एक साथ मौजूद है। हिन्दी भाषा के प्रति अटूट लगाव तथा भारतीय होने का गौरवबोध उनके व्यक्तित्व का अनिवार्य हिस्सा है।

स्वतन्त्रता संग्राम की कठिन लड़ाई व संघर्ष में हिन्दी भाषा को जातीय हथियार के रूप में प्रयोग करके श्री धर्माधिकारी ने गांधीजी के स्वराज की कल्पना को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। यह कहना गलत नहीं होगा कि भारत सरकार ने श्री धर्माधिकारी का नाम प्रतिष्ठित स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों की सूची में सम्मिलित

कर आपके महती योगदान के दशांश को ही रेखांकित करने का प्रयास किया है। आपका कद इससे कहीं बड़ा है। आप सिर्फ राष्ट्रवादी नहीं है, आपके भीतर राष्ट्र की सजीव कल्पना निरंतर अपने प्रगतिशील रूप में साकार होती रही है।

स्वतंत्र भारत में हिन्दी की गरिमा और सम्मान को अक्षुण्ण रखने, उसकी दशा और दिशा में निरंतर सुधार के लिए कृतसंकल्पित धर्माधिकारीजी अपने ही घर में अपनी भाषा अर्थात हिन्दी के सार्वजनिक अपमान से आहत हैं। उन्हें लगता है कि बिना सांस्कृतिक और राजनैतिक जागरण के हिन्दी राष्ट्रभाषा के रूप में सम्मानित नहीं हो सकती। हिन्दी विश्व की विराट भाषा है। उसकी ऐतिहासिक गरिमा को याद करके खुश और गौरवान्वित हुआ जा सकता है, लेकिन इस समय उसका वर्तमान ज्यादा शोचनीय है। अगर वर्तमान नहीं सुधरा तो भविष्य चौपट हो जाएगा। धर्माधिकारीजी मानते हैं कि हिन्दी की सच्ची सेवा हिन्दी के पाखण्ड से सम्भव नहीं है। हमें अपने विचार और संवेदना दोनों में हिन्दी को आत्यंतिक रूप से न सिर्फ शामिल करना होगा, बल्कि चरित्र के स्तर पर जीना भी होगा।

उनका एक चर्चित मुहावरा है कि 'आमलेट पर गंगाजल छिड़कने जैसे पाखण्ड से हिन्दी की दशा नहीं सुधर सकती'। असल में हिन्दी भारतीय चरित्र की भाषा है, सोच और संवेदना की भाषा है, जातीय स्मृति की भाषा है। इन सबसे कटकर हम अपंग हो जाएंगे। धर्माधिकारीजी यह मानते हैं कि यदि हमारा हिन्दी चरित्र उज्ज्वल रहा, हम चरित्रवान रहे तो हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनने से कोई नहीं रोक सकता। वस्तुतः स्वतंत्रता आंदोलन की नींव में ही हिन्दी है, इसलिए हिन्दी हमारी 'माँ' है और हमें अपनी 'माँ' का सम्मान करना चाहिए। हमारी नियति यह है कि हम अपनी स्वाभाविक स्थितियों, गतियों और मूल्य निष्ठाओं से पीछे हट रहे हैं। धर्माधिकारीजी की पीड़ा उस समय ज्यादा मुखरित हो जाती है, जब हिन्दी भाषी प्रदेश में ही वे हिन्दी का अपमान होते देखते हैं।

धर्माधिकारीजी पर्यावरणविद भी हैं। वे 'संस्कृति' और 'प्रकृति' को एक साथ लेकर चलने के हिमायती हैं। दोंनों के बीच में उचित सामंजस्य बैठाते हुए उनका व्यक्तित्व लगभग इसी का एक विराट प्रतीक बन गया है। सामाजिक न्याय, स्वदेशी, जातीय भाषा हिन्दी, नारी सशक्तीकरण और वैश्विक मूल्यों को अपनी संवेदना में निरंतर जीवित रखे हुए धर्माधिकारीजी न केवल वर्तमान पीढ़ी बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अजस्र प्रेरणा स्रोत हैं।

शिकोहाबाद में शब्दम के स्थापना दिवस पर विचार व्यक्त करते हुए पदम भूषण न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी। दूसरे चित्र में समारोह में उपस्थित प्रबुद्धजन व साहित्यकार।

मराठी साहित्यकारों का हिन्दी क्षेत्र में सम्मान

बुद्धिजीवियों का संदेश

- प्रधानमंत्री चैन्नई और संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में भाषण देंगे, उसी दिन बदल जायेगी हिन्दी की तस्वीर
- त्याग पर आधारित होना चाहिए जीवन : न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी
- आजाद भारत में अंग्रेजियत का बोलवाला, हिन्दी का सम्मान नहीं

शिकोहाबाद, निज प्रतिनिधि: जिस दिन प्रधानमंत्री चेन्नई की किसी सभा और संयुक्त राष्ट्र संघ में राष्ट्र के लिये में हिंदी में भाषण देंगे, उसी दिन पूरे भारत में हिंदी की तस्वीर बदल जायेगी। वर्तमान परिस्थितियों में हर भारतीय को चरित्रवान और ईमानदार बनाने का कार्य करना होगा। चरित्रवान व्यक्तियों के आगे हर व्यक्ति झुकता है। त्याग पर आधारित जीवन होना चाहिए।

यह विचार मुंबई उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश पदमभूषण न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी ने शुक्रवार को हिंद लैम्पस में 'शब्दम' के षष्ठम स्थापना दिवस पर आयोजित सम्मान समारोह में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा ने ही स्वतंत्रता आंदोलन की नींव रखी थी। देश को स्वतंत्रता दिलाने वाली भाषा हिंदी, जो हमारी मां है, उसका सम्मान हम नहीं कर रहे हैं। अफसोस है कि आज हिंदी भाषी लोग अपनी पीढ़ी को अंग्रेजी की तरफ दौड़ा रहे हैं। वे मातृ भाषा हिंदी को जड़ से उखाड़ कर किसे प्रतिष्ठापित करेंगे। आज के कवि व साहित्यकार पैसे के पीछे दौड़कर बिकाऊ बन गये हैं, जिससे अब उनका सम्मान नहीं है। साहित्य अपनी प्रतिष्ठा खो रहा है। आज भाषा के नाम पर मुंबई में झगड़ा है।

उन्होंने कहा कि पहले का साहित्य देव पूजा के लिये फिर देश पूजा के लिये लिखा गया लेकिन आज के साहित्य में देह पूजा को देख रहे हैं। उन्होंने कहा कि 'एक खता हम उम्र भर करते रहे, धूल तो चेहरे पर थी, हम आईना साफ करते रहे'। वे खुद केन्द्रीय हिंदी समिति के सदस्य रहे परन्तु उनके चार साल के कार्यकाल में एक भी बैठक नहीं हुई। आज ठिगने लोगों की लम्बी छाया दिखने लगी है। देश के ईमानदार साहित्यकार होंगे तो यह वातावरण बदल जायेगा। सम्मानित दूसरे मराठी साहित्यकार डा. चंद्रकांत बांदिवडेकर ने कहा कि हिंदी साहित्य की गरिमा को बढ़ाने का कार्य हमारे साहित्यकारों ने किया है। मैथली शरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, दिनकर जी, प्रेमचंद, जयनेंद्र कुमार अज्ञेय जी आदि ने अपने जीवन में उपेक्षित पहलुओं का विराट रूप प्रस्तुत कर हिंदी को वैभवशाली बनाने का कार्य किया आधुनिक साहित्यकारों ने कविता एवं पत्रकारिता के माध्यम हिंदी को सामान्य जन तक पहुंचाने का कार्य किया है।

पूर्व सांसद उदय प्रताप सिंह ने कहा कि आज मराठी प्रदेश में हिंदी के प्रति संकीर्णता का प्रदर्शन किया जा रहा है, परंतु यहां के मराठी भाषा के हिंदी सेवी साहित्यकारों का हिंदी के प्रति जो दर्द है उनके प्रति मेरा सम्मान और अधिक बढ़ा है। हिंदी के मान व सम्मान के लिये हमें हिंदी का हर जगह सम्मान करना होगा। श्रीमती किरण बजाज ने मराठी भूमि के दोनों हिंदी सेवियों का सम्मान करते हुए कहा कि निःस्वार्थ भाव से हिंदी की सेवा करने वालों का सम्मान करके हम खुशी से अभिभूत हैं। मंजर उल वासै ने 'शब्दम' संस्था का परिचय दिया। डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया, मुख्य अतिथि द्वय का परिचय प्रस्तुत किया। श्रीमती किरण बजाज एवं पूर्व सांसद उदयप्रताप सिंह ने संयुक्त रूप से चंद्रशेखर धर्माधिकारी एवं डा. चंद्रकांत बांदिवडेकर को स्मृति चिन्ह, शाल, श्रीफल व सम्मान राशि देकर सम्मानित किया। आभार डा. महेश आलोक ने व्यक्त किया। हिंद लैम्पस के कार्यकारी निदेशक [illegible] ने शब्दम सलाहकार मंडल के सदस्य उ.प्र. [illegible] गुप्ता, उमाशंकर शर्मा, मंजर उल वासै, डा. ओपी सिंह, डा. रजनी यादव, डा. एके आहूजा, डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया, डा. महेश आलोक को भी सम्मानित किया।

पाखंड से नहीं बचेगी हिन्दी की गरिमा

साहित्यिक संस्था शब्दम का स्थापना दिवस समारोह
हिन्दी के प्रयोग पर जोर

हिन्दुस्तान संवाद

सिरसागंज

हिन्दी विश्व की विराट भाषा है। उसकी ऐतिहासिक गरिमा को याद करके खुश और गौरवान्वित हुआ जा सकता है लेकिन उसके वर्तमान का सवाल पूरी तरह से सिर उठाये खड़ा है। अगर वर्तमान नहीं सुधरा तो भविष्य चौपट हो जायेगा। शब्दम के छठवें स्थापना समारोह को संबोधित करते हुए साहित्यकारों ने हिन्दी के लिये अधिकाधिक काम किये जाने की आवश्यकता पर बल दिया।

हिन्दलैम्प्स के स्टाफ क्लब भवन में आयोजित स्थापना दिवस समारोह के मौके पर मुख्य अतिथिद्वय पूर्व न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी और वरिष्ठ साहित्यकार चंद्रकांत बांदिवडेकर ने अपने नजरिये से हिन्दी पट्टी के लोगों को सोचने के लिये विवश कर दिया। प्राध्यापकों, साहित्यकारों और विचारकों की सभा में धर्माधिकारी के इस संबोधन के बाद सन्नाटा छा गया कि आमलेट पर गंगाजल छिड़कने जैसे पाखंडों से हिन्दी की दशा नहीं सुधर सकती। कवि सम्मेलनों के मंच हों या सत्यनारायण की कथा, अगर ऐसे आयोजनों को पेट भरने से जोड़ा जायेगा तो उनकी गरिमा खंड-खंड हो जाएगी। पद्मभूषण सम्मान के अलावा अनेक सम्मान और पुरस्कारों से नवाजे जा चुके धर्माधिकारी ने कहा कि हिंदी की दुर्दशा के लिये हिंदी वाले ही जिम्मेदार हैं।

उन्होंने सरकारी प्रयासों को पाखंड के संज्ञा दी। और भाषाओं के आंतरिक संपर्कों को मजबूत किये जाने की बात पर भी बल दिया। विख्यात हिन्दी-मराठी साहित्यकार डा. चंद्रकांत बांदिवडेकर ने हिन्दी की गरिमा के विषय पर उसकी ऐतिहासिक सदाशयता के उल्लेख से अपनी बात शुरू की। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद्र के रंगभूमि और गोदान जैसे उपन्यास और कहानियों के गरीब, दबे कुचले लोग हिन्दी की गरिमा है। अगर हिन्दी ने उन्हें अपनी कहानियों का नायक नहीं बनाया होता तो आज देश का वह तबका सामाजिक विकास में कई वर्ष पीछे होता। इस भाषा का यही गौरव है कि इसने समाज की पंक्ति में सबसे पीछे खड़े व्यक्ति पर अपनी नजर रखी। बांदिवडेकर ने हिन्दी की विषय वस्तु से लेकर उसके भाव और कला पक्ष की तारीफ करते हुए चिंतन की सूक्ष्म और आधुनिक दृष्टि तक की बात कही।

हिन्दलैम्प्स में शब्दम के स्थापना दिवस पर साहित्यकारों को सम्मानित करते हुए किरन बजाज और उदयप्रताप सिंह। • हिन्दुस्तान

शब्दम ने किया साहित्यकारों का सम्मान

हिन्दुस्तान संवाद

शिकोहाबाद

दाराशिकोह की ऐतिहासिक नगरी में बुद्धिजीवियों और साहित्यकारों की उपस्थिति में शब्दम ने अपना छठवां स्थापना दिवस मनाया। यकायक खराब हुए मौसम के बावजूद चंद्रशेखर धर्माधिकारी और चंद्रकांत बांदिवडेकर को सुनने के लिये जिले के प्रमुख लोग जुटे। साहित्य मर्मज्ञों के लिये दो विशेष विभूतियों की उपस्थिति के कारण यह समारोह अविस्मरणीय बन गया।

मुख्य अतिथि चंद्रशेखर धर्माधिकारी और चंद्रकांत बांदिवडेकर ने सरस्वती के चित्र पर दीप प्रज्ज्वलित और माला अर्पित कर शुभारंभ किया। जबकि अध्यक्षता वरिष्ठ कवि और पूर्व सांसद उदय प्रताप सिंह ने की। ज्ञानदीप सीनियर सेकेंडरी स्कूल की छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए शब्दम की अध्यक्ष किरन बजाज ने संस्था के कार्यों और हिन्दीसेवी सम्मान के बारे में बताते हुए मुख्य अतिथिद्वय का परिचय दिया। इस मौके पर दोनों साहित्यकारों का हरितकलश भेंट कर और सूत माता पहना कर स्वागत किया गया। हिन्दी सेवी सम्मान के रूप में स्मृति चिह्न, अंगवस्त्र और सम्मान राशि भेंट की गयी।

सलाहकार समिति के मंजरूल वासे ने शब्दम की एक साल की उपलब्धियों का खाका खींचा। वहीं डा. ध्रुवेंद्र भदौरिया ने अतिथियों का परिचय पढ़ा। 'जो सर से लेकर पैरों तक खुद्दार नहीं है, उसको कलम पकड़ने का अधिकार नहीं है' कविता की इन पंक्तियों के माध्यम से समारोह की अध्यक्षता कर रहे कवि एवं पूर्व सांसद उदयप्रताप सिंह ने हिन्दी की गरिमा के विषय पर अपनी राय रखीं। डा. महेश आलोक ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संचालन मुकेश मणिकांचन ने किया। हिन्दलैंप के कार्यकारी निदेशक सुदीप नायगांवकर ने शब्दम सलाहकार समिति के सदस्यों का स्वागत किया। उमाशंकर शर्मा, मंजरूलवासे, डा. ओपी सिंह, डा.एके आहूजा, डा.ध्रुवेंद्र भदौरिया, डा.महेश आलोक, डा. रजनी यादव आदि उपस्थित थे।

ज्ञानदीप स्कूल के वार्षिकोत्सव में छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

बच्चों ने दी मनमोहनी प्रस्तुति

शिकोहाबाद। ज्ञानदीप सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल का वार्षिकोत्सव बड़े ही धूमधाम से सम्पन्न हुआ। स्कूल के 21 वें वार्षिकोत्सव का शुभारंभ उद्यमी किरण बजाज ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। मुख्य अतिथि किरण बजाज ने बच्चों से पढ़ाई के साथ पर्यावरण संरक्षण की अपील की। मातृभाषा हिन्दी को अपनाने की सीख दी। इस मौके पर बच्चों ने आकर्षक प्रस्तुतियां दीं। बच्चों की प्रस्तुतियां देख बड़े-बड़ों ने दांतों तले अंगुली दबा ली। अतिथिगण समाज सेविका अंजनी शुक्ला,उपजिलाधिकारी एके सिंह, नरायण कालेज के प्राचार्य डॉ. जेएसपी द्विवेदी, चक्रेश जैन, डॉ एसके सिंह का बच्चों ने माल्यार्पण किया। इस मौके पर स्कूल की प्रिन्सीपल और निदेशिका डॉ. रजनी यादव ने प्रथम आने वाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया।

'राष्ट्रभाषा के अभाव में देश गूंगा होता है'

अमर उजाला ब्यूरो

साहित्यकारों ने की हिन्दी भाषा को समृद्ध बनाने की अपील

शिकोहाबाद। आपने हिन्दी को घर में मातृभाषा के रूप में जगह नहीं दी। आज घर के बच्चे दादा-दादी को हिन्दी में चिट्ठी नहीं लिख पाते। यदि घर में साहित्य की पुस्तकें रखी होंगी तो घर का बच्चा उन्हें जरूर पढ़ेगा। यदि साहित्य में रुचि नहीं होगी तो संवेदनशीलता नहीं बनेगी।

अगले दस सालों में लोग टीवी से उकता जाएंगे। यह बात विशिष्ट मराठी भाषी हिन्दी सेवा विभूतियों पद्मभूषण न्यायमूर्ति चन्द्रशेखर धर्माधिकारी (पूर्व मुख्य न्यायाधीश, मुंबई उच्च न्यायालय) एवं हिन्दी साहित्यकार डा.चन्द्रकांत बांदिवडेकर (पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष मुंबई विवि) ने एक पत्रकार वार्ता में कही। धर्माधिकारी ने कहा कि आज लोग हिन्दी को तोड़ने के काम में लागे हैं जबकि हिन्दी ने हमेशा अन्य भाषाओं को जोड़ने का काम किया है।

आज भोजपुरी, राजस्थानी के सम्मेलन हो रहे हैं। ये कैसी हिन्दी है जो बिखर रही है। लोहिया को अदालत में हिन्दी में बहस नहीं करने दी गई क्या ऐसा किसी दूसरे देश में हो सकता है। कहा कि जिस देश की राष्ट्र भाषा नहीं होती वो देश गूंगा होता है।

वर्तमान दौर टीवी, रियलटी शो का है और लोगों का रुझान साहित्य की ओर कम है। इस पर साहित्यकार डा.चन्द्रकांत बांदिवडेकर ने कहा कि लेखक के लेखन से समाज में परिवर्तन हो सकता है। अच्छा साहित्य पढ़ने वालों की संख्या कम है, लेकिन दायरा बढ़ता जाएगा। भारत में हिन्दी की दशा बुरी है यह नहीं कहा जा सकता।

लेकिन हिन्दी के जानकारों को, मातृभाषा वालों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में अपने बच्चों को रखने की प्रवृत्ति यूपी व अन्य हिन्दी भाषी राज्यों में अधिक है।

इस प्रवृत्ति को रोकने का नैतिक अधिकार हिन्दी अखबारों को है। इस दौरान साहित्यिक संस्था की अध्यक्ष किरण बजाज भी उपस्थित थीं उन्होंने कहा कि हिन्दी बोलने में हमें शर्म नहीं गर्व महसूस करना चाहिए।

पद्मभूषण धर्माधिकारी और बांदिवडेकर सम्मानित

शिकोहाबाद के हिन्द लैम्प में आयोजित शब्दम के स्थापना दिवस पर विचार प्रकट करते न्यायमूर्ति चन्द्र शेखर धर्माधिकारी

स्थापना दिवस पर चंद्रशेखर धर्माधिकारी ,उदय प्रताप सिंह माँ सरस्वती पर दीप प्रज्जलित करते मुख्य अतिथि ।

सुधारें हिन्दी की दशा और दिशा

वक्तव्य

- सत्यनारायण की कथा को पेट भरने से न जोड़ा जाए
- हिन्दी के उत्थान के लिए करनी होगी अब ठोस पहल

सिरसागंज। शब्दम के स्थापना दिवस के मौके पर हिन्दी की गरिमा और वर्तमान दशा पर चिंतन के साथ दो वरिष्ठ साहित्यकारों को सम्मानित किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि साहित्यकार और समाजसेवी पूर्व न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी और चंद्रकांत बांदिवडेकर ने हिन्दी प्रेमियों से उसकी दशा और दिशा सुधारने का आह्वान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्यअतिथियों ने सरस्वती के चित्र पर दीप प्रज्ज्वलित और माल्यार्पण कर किया।

शब्दम की अध्यक्षा किरन बजाज ने शब्दम के कार्यों और हिन्दी सेवी सम्मान के बारे में बताते हुए मुख्य अतिथियों का परिचय कराया। इसके बाद दोनों साहित्यकारों का हरितकलश भेंट कर, सूत माला पहना कर स्वागत किया गया। हिन्दी सेवी सम्मान के रूप में स्मृति चिन्ह, अंगवस्त्र और सम्मान राशि भेंट की गयी। सलाहकार समिति के मंजरूल वासे ने शब्दम की उपलब्धियों का खाका खींचा।

कार्यक्रम को संबोधित करते चंद्रशेखर धर्माधिकारी ने कहा कि आमलेट पर गंगाजल छिड़कने जैसे पाखंडों से हिन्दी की दशा नहीं सुधर सकती है। कवि सम्मेलनों के मंच हों या सत्यनारायण की कथा, अगर ऐसे आयोजनों को पेट भरने से जोड़ा जायेगा तो उनकी गरिमा भंग हो जाएगी। पद्मभूषण से सम्मानित धर्माधिकारी ने कहा कि हिंदी के उत्थान को अब ठोस पहल होनी होगी। विख्यात साहित्यकार डा. चंद्रकांत बांदिवडेकर ने हिन्दी की गरिमा के विषय पर बोलते हुए हिंदी के महान उपन्यास और कहानियों के गरीब और बेसहारा पात्रों की बात की। उन्होंने कहा कि हिन्दी ने अपनी कहानियों में इन पात्रों को समेट कर समाज को दिशा दी। उन्होंने हिन्दी के भाव और कला पक्ष की तारीफ करते हुए चिंतन की सूच्छम और आधुनिक दृष्टि की भी सराहना की। समारोह की अध्यक्षता कर रहे कवि एवं पूर्व सांसद उदयप्रताप सिंह ने हिन्दी की गरिमा के विषय पर कविता की शैली में विचार प्रकट किये। सलाहकार समिति के डा. महेश आलोक ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए नगर के साहित्यकारों की ओर से धर्माधिकारी और बांदिवडेकर के प्रति आभार प्रकट कर समारोह को अविस्मरणीय बताया। संचालन मुकेश मणिकांचन ने किया। हिन्दलैम्प के कार्यकारी निदेशक सुदीप नायगांवकर ने शब्दम सलाहकार समिति के उमाशंकर शर्मा, मंजरूलवासे, डा. ओपी सिंह, डा.एके आहूजा, डा.ध्रुवेंद्र भदौरिया, डा.महेश आलोक, डा.रजनी यादव और मुकेश मणिकांचन का स्वागत किया।

शब्दम् का छठा स्थापना दिवस

मराठी साहित्यकारों का हिंदी क्षेत्र में सम्मान

शब्दम् ने मनांया षष्टम् स्थापना दिवस समारोह

अमर उजाला ब्यूरो

शिकोहाबाद। हिन्दी क्षेत्र की अग्रणी संस्था शब्दम् ने अपने षष्टम् स्थापना दिवस के अवसर पर मराठी भाषी, हिन्दी सेवी दो साहित्यकारों पद्मभूषण न्यायमूर्ति चन्द्रशेखर धर्माधिकारी व डां. चन्द्रकांत बांदिवडेकर का सम्मान, कर हिन्दी एवं मराठी दोनों ही संस्कृतियों को जोड़ने का कार्य को किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज, कार्यक्रम अध्यक्ष पूर्व सांसद उदय प्रताप सिंह, न्याय मूर्ति चन्द्रशेखर व डां. चन्द्रकांत ने वाग्देवी के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ किया। ज्ञानदीप की उप प्रधनाध्यापिका रेखा शर्मा ने सरस्वती वंदना की व छात्राओं ने स्वागत गान प्रस्तुत किया। शब्दम् अध्यक्ष ने अतिथिद्वय को सूत माला व हरित कलश देकर स्वागत किया। इस अवसर पर किरण बजाज ने कहा कि शब्दम् ने अपना पांचवा स्थापना दिवस मराठा भूमि पर हिन्दी भाषी का सम्मान कर मनाया था और अपने छठवें स्थापना दिवस के अवसर पर हिन्दी सेवी मराठी विभूतियों का सम्मान कर अपने को गौरान्वित महसूस कर रहा है।

पूर्व सासंद उदय प्रताप व किरण बजाज ने अतिथिद्वय को शाल, स्मृति चिह्न, श्रीफल आदि देकर सम्मानित किया। न्यायमूर्ति धर्माधिकारी ने इस अवसर पर कहा कि अपने ही देश में जब प्रधानमंत्री चेन्नई में भाषण देंगे तो क्या वे हिन्दी में दे पाएंगे।

कार्यक्रम में डा. बांदिवडेकर की किताबों का स्टांल लगाया गया। कार्यक्रम में बालकृष्ण गुप्ता, डा. एके आहूजा, मंजरउलवासै, महेश आलोक एसपी नयगांवकर, पीके धवन,बीएन गुप्ता, ओपी पांडेय, डा.एसकेसिंह चौहान,केजे सिंह, मनोज कुलश्रेष्ठ, मनमोहन सिंह आदि उपस्थित थे।

हिन्दी की गरिमा को बचाने का लें संकल्प

मराठी होकर बजाया हिंदी का बिगुल

साहित्य, संगीत और कला को समर्पित संस्था शब्दम् ने अपने छठवें स्थापना दिवस पर दो ऐसी शख्सियतों का सम्मान किया, जो गैर हिंदी प्रदेशों के होने के बावजूद आजीवन हिंदी की सेवा करते रहे। यह शख्सियत थे महाराष्ट्र हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस रहे गांधीवादी विचारक चंद्रशेखर शंकर धर्माधिकारी और हिंदी और मराठी के सुप्रसिद्ध समालोचक चंद्रकांत बांदिवडेकर। संस्था के कार्यक्रम में भाग लेने से पूर्व संस्था की अध्यक्ष किरन बजाज के हिंद लैंप परिसर स्थित आवास पर यह दोनों साहित्यिक पुरोधा पत्रकारों से रूबरू हुए...

हिंदी वालों ने नहीं की हिंदी सेवा : धर्माधिकारी

हिंदी के सेतु को टूटने न दें : बांदिवडेकर

मुंबई विश्वविद्यालय के हिंदी के पूर्व विभागाध्यक्ष ने की हिन्दी की वकालत

हिन्दुस्तान संवाद

'शब्दम्' प्रश्न मंच' श्रृंखला – 2010

शब्दम् ने 'हिन्दी प्रश्न मंच प्रतियोगिता श्रृंखला – 2010' के अन्तर्गत शिकोहाबाद के साथ–साथ जसराना व फिरोजाबाद के स्कूलों में भी प्रश्न मंच प्रतियोगिताओं का आयोजन किया।

यह प्रतियोगिताएं कक्षा 9 से 12 के छात्र–छात्राओं के बीच में आयोजित की गईं। नगर के प्रसिद्ध हिन्दीसेवी श्री मंज़रउल वासै ने विद्यार्थियों से हिन्दी भाषा, हिन्दी साहित्य एवं पौराणिक प्रश्नों को बहुत ही रोचक तरीके से पूछा। प्रतिभागियों को शब्दम् की ओर से प्रत्येक सही उत्तर पर एक छोटा पुरस्कार दिया गया।

यह प्रतियोगितायें शिकोहाबाद के डी.आर. इण्टर कॉलेज, गार्डेनिया इण्टर कॉलेज, ठा. तारा सिंह इण्टर कॉलेज, जसराना के एल.आर. इण्टर कॉलेज व राजकीय गर्ल्स इण्टर कॉलेज एवं फिरोजाबाद के बृजराज सिंह गर्ल्स इण्टर कॉलेज वं तिलक इण्टर कॉलेज में आयोजित की गईं।

'शब्दम्' की ओर से प्रत्येक वर्ष जनपद के विभिन्न विद्यालयों/महाविद्यालयों में हिन्दी प्रश्न मंच प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं जिनका उद्देश्य विद्यार्थियों की परीक्षा लेना नहीं बल्कि इसके माध्यम से उनके ज्ञान में वृद्धि करना है।

हिन्दी प्रश्नोत्तरी के कुछ प्रश्न :

प्रश्न 1– तत्सम शब्द बताइए: तद्भव सासू

उत्तर – तत्सम श्वश्रू

प्रश्न 2 –'हिन्दी और देवनागरी' में क्या अन्तर है ?

उत्तर–हिन्दी भाषा है जबकि देवनागरी लिपि है ।

प्रश्न 3– अर्थ बताइए: मातामही

उत्तर–नानी अर्थात् माता की माता

प्रश्न 4– वाक्यांश : यात्रा में रास्ते का खर्चा (Travelling expenses)

उत्तर–एक शब्द: पाथेय

प्रश्न 5– कौन सा अधिक सही है? अंगुली, उंगली

उत्तर–तत्सम अँगुली तद्भव उँगली

प्रश्न 6– 'अर्दली' शब्द किस शब्द से बना है :

उत्तर–अंग्रेजी शब्द (Orderly) से

प्रश्न 7– गलती बताइए: वह बी.ए.भाग प्रथम का छात्र है ।

उत्तर–भाग 1 (एक) या प्रथम भाग

प्रश्न 8– स्त्रीलिंग बताइए: दाता

उत्तर–दात्री

प्रश्न 9– Devaluation की हिन्दी बताइये:

उत्तर–अवमूल्यन या विमूल्यन

प्रश्न 10– द्रव और द्रव्य में अन्तर बताइये।

उत्तर–द्रव–तरल, गीला, आर्द्र द्रव्य–पदार्थ, धातु जैसे– लोहा, सोना आदि।

प्रश्न 11– 'सौमित्र' किस का नाम है?

उत्तर–सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण का

प्रश्न 12– अन्तर बताइए: पर–जन , परिजन

उत्तर–पर–जन अन्य पुरुष (व्यक्ति) परिजन–परिवारी जन

शब्दम् ने किया प्रश्न मंच का आयोजन

शिकोहाबाद। अम्बेडकर गांव असुआ में संस्था शब्दम की ओर से एक "हिन्दी प्रश्न मंच" का कार्यक्रम आयोजित किया गया था। जिसका शुभारम्भ पी.के. धवन व सुदीप नयगांवकर ने संयुक्त रूप से मां सरस्वती के चित्र पर दीप प्रज्वलित कर व माल्यार्पण कर किया। इस मौके पर बोलते हुए पालीवाल महाविद्यालय के प्राचार्य डा. ओ. पी. सिंह ने बताया कि आतंकवाद, भृष्टाचार, प्रदूशण को रोकने के लिए इनकी जड़ों तक जाना होगा और पता लगाना होगा कि ये पनपता कहां से है। हमारे देश में कन्या भ्रूण हत्या जैसे जघन्य अपराध दिनों दिन बढ़ते जा रहे हैं। थोडे से पैसे के लालच में डाक्टर महिलाओं का अल्ट्रासाउन्ड करके ये बता देते हैं कि गर्भ मे पल रहा लिंग कौन सा है। जिसके चलते कन्या को तो लोग गर्भ में ही समाप्त करावा देते हैं। इसके लिए हमारे समाज की नारी ही जिम्मेदार है। वह ये नही सोचती कि हम भी तो एक महिला हैं? पयार्यवरण संस्था के सचिव डा. बी.एन. गुप्ता ने बताया कि पयार्यवरण मित्र एक समाज सेवी संस्था है। पिछली सरकार ने हिन्दी के प्रचलन पर दिया था लेकिन हिन्दी व्यवयायिक शिक्षा नही बन पायी इसलिए हिन्दी का प्रचलन कम हो गया है। हिन्दी के प्रचलन को बढ़ाने के लिए हम सबको हिन्दी में ही काम करना चाहिए। संस्था के कार्यकारी निदेशक सुदीप नयगांवकर ने कहा कि आज दो तरह के प्रदूशण हैं। एक प्रत्यक्ष और दूसरा अप्रत्यक्ष। हमें अपनी सोच बदलनी होगी। दिमाग में अच्छे-अच्छे विचार लाने होगे। अच्छा सोचने से देश का भविश्य तय होता है। पी.के. धवन महाप्रबन्धक वित्त ने कहा कि लड़के की चाहत में तमाम महिलाऐं गर्भ में लड़की होने पर गर्भपात करा देतीं है। उन्हे ये कैसे पता कि आने वाली संन्तान हमारी सेवा नही करेगी या समाज मे हमारे परिवार का नाम रोशन नही करेगी। वह ये नही सोचती है कि हम भी एक महिला हैं। प्रबन्धक एव प्रशासन अनुज सिसौंदिया ने कहा कि पेड़ों के कटान से दिनो दिन वायुमण्डल में जहरीली गैसे बढ़ती जा रही हैं। वातावरण को स्वच्छ साफ रखने के लिए ज्यादा से पेड़ लगाने चाहिए। इस मौके पर मंजर उल वासै, डा. अजय कुमार, एस.के. मिश्रा, बृजेश सारस्वत, गोपाल सिंह, गुल्फम, शशीकान्त पाण्डेय आदि लोग मौजूद थे।

मां सरस्वती के चित्र पर दीप प्रज्वलित करते हुए कार्यकारी निदेशक सुदीप नयगांवकर व हिन्दी प्रश्न मंच कार्यक्रम में उपस्थित छात्र-छात्राएं

न्यू गार्डेनिया में प्रश्नमंच के दौरान मंजर-उल-वासै और प्रधानाचार्य।

'शब्दम' ने आयोजित किया प्रश्न मंच

शिकोहाबाद। साहित्यिक संस्था शब्दम द्वारा आवास विकास कालोनी स्थित न्यू गार्डेनिया पब्लिक स्कूल में प्रश्न मंच का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षा प्रधानाचार्य जयवीर सिंह तोमर ने की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मंजर-उल-वासे ने छात्र-छात्राओं से हिंदी साहित्य, व्याकरण के साथ ही पौराणिक विषयों से संबंधित प्रश्न पूछे। सही उत्तर देने वाले छात्रों में तय्यब, प्रवीन, वंशिता, धवन, अमन, शुम्बुल, अविनाश और अनुभव शामिल थे। विजयी छात्रों को स्कूल के प्रधानाचार्या तोमर ने पुरस्कार प्रदान करते हुए इस प्रतियोगिता का महत्व बताया और अगली बार और अच्छी तैयारी करने का सुझाव दिया।

हिन्दी प्रश्न मंच प्रतियोगिता आरम्भ

- शिकोहाबाद के साथ जसराना, सिरसागंज और फीरोजाबाद में भी होगी प्रतियोगिता

शिकोहाबाद, निज प्रतिनिधिः साहित्य संगीत एवं कला को समर्पित संस्था शब्दम ने डीआर इण्टर कालेज में हिन्दी प्रश्न मंच प्रतियोगिता श्रृंखला 2010-11 का शुभारम्भ किया। यह प्रतियोगिता कक्षा 9 से 12 के छात्रों के मध्य हुई।

प्रसिद्ध हिन्दी सेवी साहित्यकार मंजर उल वासे ने छात्रों से हिन्दी भाषा, हिन्दी साहित्य एवं पौराणिक प्रश्नों को बहुत ही रोचक तरीकों से पूछा। इस अवसर पर प्रतिभागियों को शब्दम की तरफ से सही उत्तर देने पर छोटा पुरस्कार भी प्रदान किया गया। शब्दम प्रत्येक वर्ष नगर के विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में हिन्दी प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन छात्रों में हिन्दी के ज्ञान में वृद्धि के लिए करती रही है। इस वर्ष यह कार्यक्रम शिकोहाबाद के साथ जसराना, सिरसागंज, फीरोजाबाद के विद्यालयों में भी होगा। प्रतियोगिता को सफल बनाने में डीआर इण्टर कालेज के प्रधानाचार्य ओमप्रकाश, प्रबंधक दरमन

हिन्दी प्रश्न मंच प्रतियोगिता में भाग लेती बालिका। सिंह एवं शिक्षकों सहित शब्दम समन्वयक सुरजीत सिंह मेहराज ने भूमिका निभाई।

अंग्रेजी की गुलामी आत्मघाती : किरन

हिंदी को राष्ट्रभाषा के साथ जनभाषा के रूप में स्थापित करने की अपील

हिन्दुस्तान संवाद

फिरोजाबाद

हिंदी का उत्थान सही मायने में संस्कारों का उत्थान है। उत्थान है संस्कृति का और उत्थान है भारत का। इस उत्थान का मार्ग प्रशस्त करना है हिंदी पट्टी के हर निवासी को। हमें व्रत लेना है कि हिंदी को राष्ट्रभाषा के साथ ही जनभाषा के रूप में प्रतिस्थापित करने का। इसमें मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण है। यह कहना है देश के प्रतिष्ठित औद्योगिक घराने बजाज ग्रुप की निदेशक और शब्दम, पर्यावरण मित्र सहित कई सामाजिक व साहित्यिक संस्थाओं की अगुवाई …

विस्तार से अपने हिंदी प्रेम को शब्द प्रदान किए अपितु हिंदी की पुरजोर पैरवी भी की। श्रीमती बजाज ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आज अंग्रेजी की स्वीकार्यता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। किंतु हमें अंग्रेजी या अन्य भाषाओं को अपनी बात … पहुंचाने का माध्यम भर ही मान …

फ्लाइट से अपनी कलकत्ता यात्रा का जिक्र करते हुए कहा कि हिंदी का अखबार मांगने पर कह दिया गया कि उसे कोई मांगता नहीं है, सो बंद कर दिया गया है इस बात पर उन्होंने कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए एयरवेज प्रबंधन को भी कड़ा पत्र लिखा। समाजसेवा के क्षेत्र से जुड़ी किरण कहती हैं कि हिंदी की सेवा में सभी को योगदान देना चाहिए। बजाज इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड ग्रुप में हिंदी को खासा महत्व दिया जाता है। ग्रुप की वार्षिकी अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में भी छापी जाती है ताकि हिंदी पट्टी के लोग उसे अपनी ही भाषा में पढ़ सकें। इस दौरान करीब दो घंटे हिंदी की स्थिति …

राष्ट्रीयता का बोध कराती है हिंदी

शिकोहाबाद। हिन्दी भारतीयता का बोध कराती है। हिंदी भाषा ही नहीं संस्कृति है। इसके प्रति हीनभावना और उदासीनता अपने आपसे बेमानी है। हिंदी दिवस के मौके पर पत्रकारों से रूबरू होते हुए शब्दम और पर्यावरण मित्र की संस्थापक किरण बजाज ने कहा कि हिंदी को आम बोलचाल में ही नहीं अपने जीवन में आत्मसात करने की जरुरत है। उन्होंने हिंदी के उत्थान के लिए लोगों से आगे आने का आह्वान किया। हिंद लैंप्स के गेस्ट हाउस 'कल्पतरू' में श्रीमती बजाज ने कहा ने कि वह अंग्रेजी अथवा अन्य भाषाओं को सीखने की विरोधी नहीं हैं, लेकिन हिंदी व्यवहार, बोलचाल एवं जीवन से दूर न होने देने की हिमायती हैं। उन्होंने यह भी कहा कि वह देश की बड़े उद्योग घराने से ताल्लुक रखती हैं, लेकिन इसके बाद उन्हें हिंदी बोलने तथा हिंदी में कामकाज करने में गौरव महसूस होता है। यहां तक उन्होंने हिंद लैंप्स की बैलेंस शीट को भी हिंदी में बनवाए जाने की बात कही। शब्दम और पर्यावरण मित्र की संस्थापक बजाज ने आह्वान किया कि हिंदी भाषा ही हमारी संस्कृति की पहचान है। भाषा …

संस्कार और हिन्दी का चोली-दामन का साथ:किरण बजाज

शिकोहाबाद। …दी एशिया की नम्बर एक कही जाने वाली फैक्ट्री हिन्द लैम्प्स में आज हिन्दी दिवस के मौके पर पत्रकार सम्मेलन का आयोजन किया गया। प्रेसवार्ता के दौरान साहित्य-संगीत-कला को समर्पित शब्दम् संस्था की अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने कहा कि अंग्रेजी सीखने वाले लोग राष्ट्र भाषा को भूलते जा रहे हैं। आज शिक्षा ने व्यावसायिक रूप धारण कर लिया है। केवल डिग्री पाने की लालसा है। ट्यूशन एक धन्धा है। … में २८ राज्य हैं सभी … अलग भाषा व बोलियां … का जन्म हिन्दी से ही … सम्पूर्ण राष्ट्र को … करती है उर्दू, अरबी भाषाओं के … बजूद भी हिन्दी … हो गये हैं जैसे … बद्ध हों। अंग्रेजी … सम्प्रेषण के …। इसके लिए …

किसी समय आप अंग्रेजी भाषा सीखे लेकिन हिन्दी को अपने व्यवहार विचार बोलचाल जीवन से अलग न करें। हिन्दी हमारी संस्कृति देश प्रेम का बोध कराती है। अगर हम विदेश में जाये और वहां कोई हिन्दी भाषी मिल जाता है तो हमारा दिल गदगद हो जाता है। क्योंकि हिन्दी भारतीयता की याद दिलाती है। भारत में ही हिन्दी का विरोध होता है तिरस्कार होता है। इसकी उपेक्षा होती है तो मन में बहुत कष्ट होता है। हम हिन्दी का तो विरोध करते हैं जो कि हमारी है तो अंग्रेजी का विरोध क्यों नहीं करते है। आज गणित, आयुर्वेद भी अंग्रेजी में सीखते हैं। जबकि गणित और आयुर्वेद तो भारत की ही देन है। यह सब संस्कृत व हिन्दी में लिखे गये हैं। हमारा इतिहास हिन्दी में ही लिखा गया है। फिर उसे हम दूसरी भाषा में क्यों सीखते हैं। गीता को संस्कृत और हिन्दी में पढ़ने से आनन्द की जितनी अनुभूति होती है। क्या उतनी अंग्रेजी में होगी? हमारे देश में हिन्दी …

हिन्दी के साहित्यकार हुए हैं। आज के दौर में हिन्दी जैसा असली सोना तिजारी में रखा है और अंग्रेजी जैसी पीतल की धातु से लोग गले की शोभा बढ़ा रहे हैं। अंग्रेजी को टूल की तरह इस्तेमाल करें। अंग्रेजी को संस्कारों में डालना एक भूल है।

आज स्वतंत्र भारत में हिन्दी भाषा के ऊपर प्रश्न उठ रहे हैं और भारत के लोग हंस रहे हैं। कहीं-कहीं तो संस्कारों की कमी है और पाश्चात्य संस्कृति हावी हो गयी है। संस्कार और हिन्दी भाषा का चोली दामन का साथ है। हिन्दी के प्रति लोगों में हीन भावना नहीं होनी चाहिए। यदि कोई अंग्रेजी में काम करता है तो उसे हिन्दी भाषा के प्रति हीन भावना नहीं होनी चाहिए। आज प्रत्येक व्यक्ति अपने बच्चों को अंग्रेजी स्कूल में पढ़ाना चाहता है। लेकिन शिक्षा का स्तर इतना नीचे गिर गया है। कि स्कूल तो अंग्रेजी का खोल लिया है लेकिन उसकी प्रधानाचार्या अंग्रेजी …

भाषा ही हमारी संस्कृति की पहचान: किरन बजाज

फीरोजाबाद। अंग्रेजी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्प्रेषण के लिए उपयुक्त भाषा है। इसके लिए आप अंग्रेजी सीखें लेकिन हिंदी को अपने व्यवहार, बोलचाल अथवा जीवन से अलग न करें। हमारी भाषा ही हमारी संस्कृति की पहचान है। हमारी भाषा का खत्म होने का अर्थ है कि हमारी संस्कृति का समाप्त हो जाना।

यह उद्‌गार किरन बजाज हिंद लैम्पस परिसर में आयोजित पत्रकार सम्मेलन में व्यक्त किए। उन्होंने जमनालाल बजाज के शब्दों को दोहराते हुए कहा कि हिंदी ईमान और देश प्रेम की भाषा है। हिंदी उत्थान हेतु जमनालाल बजाज ने कई शिक्षण संस्थान स्थापित किए। जहां आज भी शिक्षण कार्य हिंदी में ही कराया जाता है। उन्होंने हिन्दी के उन्नयन के लिए हिन्दी पत्रकारिता से जुड़े पत्रकारों से आह्वान किया कि पत्रकार अपनी लेखनी से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गौरव दिला पाने में समर्थ है। हिन्दी भाषा हमारी संस्कृति से जुड़ी है जबकि अंग्रेजी का प्रोत्साहन वहीं तक ठीक है जहां तक हमारे विकास में सहायक है।

पत्रकार सम्मेलन में किरन बजाज ने कहा कि अपने देशवासियों और हिन्दी भाषियों को जो हिन्दी के उत्थान के कार्य में लगे हैं, उनको नमन करती है एवं उन पत्रकारों, साहित्यकारों को जो हिन्दी भाषा के उन्नयन में अपना अमूल्य योग दे रहे हैं। आगे बोलते हुए कहा कि हमारे देश की प्रगति उसके भौगोलिक क्षेत्र से नहीं बल्कि उसकी प्रकृति और संस्कृति पर निर्भर करती है।

हमारे ही लोग हिन्दी का विरोध कर अंग्रेजी भाषा को राष्ट्रीय भाषा बनाने में लगे हैं। हिनदी ही एक मात्र 6 भाषा है जो पूरे देश को ग्राह्य है। कुछ तो हिन्दी बोलने वालों को हेय दृष्टि से देखते हैं जबकि कोई देश बिना अपनी भाषा के विकास की सीढ़ी नहीं चढ़ा है। जिन्होंने अपनी संस्कृति को भुला दिया उनकी अपनी पहचान ही खो दी। जब भारत में हिंदी का विरोध होता है अथवा इसकी उपेक्षा होती है तो बहुत पीड़ा होती … हिंदी का विरोध करते हैं जोकि हम… है। अंग्रेजी का विरोध क्यों नहीं?

हमारे देश में हिन्दी के … साहित्यकार हुए जिनका साहित्य अमूल्य है एवं दुनिया भर में उन… का अनुवाद अपनी-अपनी भाषा… जाता है। हमारी भाषा ही हमारी सं… पहचान है। हमारी भाषा की पहच… होने का अर्थ, हमारी देश ही संस्… होना है। हिन्दी उत्थान के लिए हमें … से ही शुरूआत करनी पड़ेगी। … एक दिन मनाने का नहीं, हर दिन का है। इस मौके पर जनपद के … पत्रों एवं चैनलों के संवाददाता… सभी पत्रकारों ने किरन बजाज … कि उन्होंने हिन्दी उत्थान के लि… भूमिका को पहचान व उन्हें बोध कराया।

हिन्दी की गरिमा को बढ़ाएं

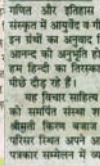

शिकोहाबाद, निज प्रतिनिधि: हिन्दी हमें हमारी संस्कृति और देश प्रेम का बोध कराती है। हिन्दी में ही भारत में गणित और इतिहास लिखा गया है। संस्कृत में आयुर्वेद व गीता लिखी गयी है। इन ग्रंथों का अनुवाद हिन्दी में पढ़ने पर आनन्द की अनुभूति होती है। परंतु आज हम हिन्दी का तिरस्कार कर अंग्रेजी के पीछे दौड़ रहे हैं।

यह विचार साहित्य संगीत और कला को समर्पित संस्था शब्दम की अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने हिन्द लैम्पस परिसर स्थित अपने आवास कल्पतरू में पत्रकार सम्मेलन में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि हिन्दी को देश में राष्ट्रभाषा का पूर्ण सम्मान है। हिन्दी की गरिमा को बढ़ाएं। भारत में हिन्दी भाषा सभी भाषाओं व राज्यों को जोड़ने का कार्य करती है।

उन्होंने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजी सम्प्रेषण के लिए उपयुक्त भाषा है। इसके लिये अंग्रेजी सीखें, लेकिन हिन्दी को अपने व्यवहार बोलचाल अथवा जीवन का अंग बनाने का कार्य करें। उन्होंने कहा कि मीडिया का भी इस क्षेत्र में विशेष योगदान है। वह हिन्दी का तिरस्कार और उपेक्षा करने वाले भारतीय लोगों को अपनी संस्कृति व प्रकृति का ज्ञान कराती है। उन्होंने कहा कि अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में छात्रों को अधकचरा ज्ञान ही मिल पाता है। इन स्कूलों में शिक्षा का स्तर इतना गिर गया है कि वहां का प्रधानाचार्य भी अंग्रेजी में नहीं बोल सकता है। उन्होंने महान कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का स्मरण बताया जिसमें पं. जवाहर लाल नेहरू ने हिन्दी अनुवाद के लिये सार्वजनिक तौर पर मांफी मांगी थी।

उन्होंने कहा कि हिन्दी के प्रति हीन भावना को समाप्त करें। हमारी भाषा ही हमारी संस्कृति की पहचान है। हमारी भाषा के समाप्त होने का अर्थ है। भारत की संस्कृति का समाप्त होना जमना लाल बजाज ने कहा था कि हिन्दी ईमान और देश प्रेम की भाषा है। उन्होंने आज होने वाले हिन्दी दिवस पर प्रत्येक देशवासी से हिन्दी के उत्थान के लिये समर्पित होकर कार्य करने पर जोर दिया। हिन्दी दिवस की पूर्व संध्या पर शब्दम की अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने हिन्दी सेवा में समर्पित होकर कार्य करने वाले जनपद के पत्रकारों का सम्मान किया।

समाज के परिवर्तित होने पर ही नारी दशा का परिवर्तन संभव: किरन

सिरसागंज। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के 100 वर्ष पूरे होने के बाद भी नारी आज भी परितंत्रता की बेड़ीओं में जकड़ी है। ये वक्तव्य भारत विकास परिषद द्वारा महिला दिवस पर आयोजित विचार गोष्ठी में समाजसेवी किरन बजाज ने समाज के समक्ष सवाल के रूप में रखे।

इटावा रोड़ स्थित एक मैरिज होम आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के में किरन बजाज, पूर्व पालिकाध्यक्ष चतुर्वेदी, नवोदय विद्यालय की प्रधा... स... म... द्विवेदी... देवी, ... औ... मं...

मंथन

महिलाओं की दशा और दिशा पर किया गया विचार विमर्श

प्रारंभ में भारत विकास ... अतिथियों को उनके द्वा... रहे कार्यों के लिये श... किया गया जिसके ब... में आज हो रही दशा पर ... किया गया।

कार्यक्रम में बोलते हुए जहां पूर्व पालिकाध्यक्ष सुमन चतुर्वेदी ने उपस्थित महिलाओं के उत्साह को बढ़ाया वहीं गीतांजली ने महिलाओं को आत्मिक अध्ययन के बल पर उन्नति करने की सलाह दी।

घरेलू हिंसा पर महिलाओं को दी कानूनी जानकारी

शिकोहाबाद/टूण्डला, निज प्रतिनिधि: अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा लगाए महिला विधिक साक्षरता शिविर में महिलाओं पर घरेलू हिंसा से संबंधित कानून की जानकारी दी गयी।

प्राधिकरण अध्यक्ष ज़िला जज अशोक कुमार अग्रवाल के निर्देशानुसार मैनपुरी रोड स्थित जेएस इंजीनियरिंग कालेज परिसर में लगे शिविर का शुभारंभ अपर जिलाजज द्वितीय फीरोजाबाद विशेष शर्मा ने मां सरस्वती की प्रतिमा पर दीप प्रज्वलित

- महिलादिवस पर लगा विधिक साक्षरता शिविर
- महिला दिवस पर हुए विविध कार्यक्रम

करके किया। उन्होंने शिविर का ... बताते हुए महिलाओं से कहा कि वे ... क्षेत्र में महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों रोकने के कानून संबंधी जानकारी महिलाओं को दें, जिससे उन्हें कानूनी मदद मिल सके और उन पर अत्याचार रोके जा सकें।

संचालन कर रहे प्राधिकरण के सचिव सिविल जज (सीडि) अशोक कुमार यादव ने बताया कि महिलायें, बच्चे, मानसिक रोगी, विकलांग, अनु.जाति, जनजाति के सदस्य, श्रमिक कारागार के बंदी तथा ऐसे लोगों को निःशुल्क विधिक सहायता,

अधिवक्ता, कोर्ट फीस और अन्य खर्चे प्राधिकरण की ओर से दिये जाते हैं, जिनकी वार्षिक आय 50 हजार रुपये से कम है।

न्यायिक मजिस्ट्रेट फीरोजाबाद अवधेश कुमार सिंह, सिविल जज (जूडि) राकेश पटेल, भावना गुप्ता, फरहत, डा. गीता यादव, संस्थान के डाइरेक्टर आरपीएस पुण्डीर ने विचार व्यक्त किये। चेयरमैन डा. सुरेखा यादव ने आभार व्यक्त किया।

की ओर उन्मुख होने का आह्वान किया।

इस अवसर पर प्राचार्य डा. ओपी सिंह महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों के बारे में बताते हुए कहा कि यदि समय रहते हमारा समाज महिलाओं के सम्मान और ... प्रति सजग नहीं हुआ ... पीढ़ियों में ...

संसद में महि...

महिलाओं को किया सम्मानित

हिन्दुस्तान संवाद

सिरसागंज

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर यहां आयोजित गोष्ठी में महिलाओं के अधिकार, सुरक्षा और सामाजिक सम्मान की आवाज को बुलंद किया गया। मुख्य अतिथि समाजसेवी किरन बजाज ने कहा कि महिलाओं के सम्मान के ... पुरूषों के साथ-साथ महिल... है। इस मौके पर किरन ब... समाजसेवी महिलाओं को ... किया गया।

सुमंगलम में भारत ... द्वारा आयोजित गोष्ठी ... समारोह का शुभारंभ ... भारत माता के चित्र ...

किया। नारी उत्थान के लिए प्रयासरत किरन बजाज का विशेष सम्मान किया गया। इसके अलावा कॉपरेटिव बैंक की अध्यक्षा रीता सिंह, जवाहर नवोदय विद्यालय की प्राचार्या सुमनलता द्विवेदी, पूर्व पालिकाध्यक्ष सुमन चतुर्वेदी एवं सरोज शर्मा, माथुर वैश्य महिला मंडल की राष्ट्रीय महासचिव स्वदेश गुप्ता, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी आश्रम की ... गीतांजलि बहन और वयोवृद्ध ... को भी नारी

महिमा का बखान किया। ब्रह्मादेवी और गीतांजलि बहन ने ज्ञान के माध्यम से शक्ति अर्जित करने का संदेश दिया। सुमन चतुर्वेदी, सुमनलता द्विवेदी, स्वदेश गुप्ता ने महिलाओं से सामाजिक क्रांति का बिगुल फूंकने का आह्वान करते हुए कहा कि हमें अपनी परंपराओं और मर्यादाओं का सम्मान भी करना है। कवि बहादुर सिंह निर्दोषी ने भी काव्यपाठ किया। इस मौके पर भारत विकास परिषद के अध्यक्ष प्रशांत गुप्ता, सचिव राजेंद्र ...लाल, डॉ. संजीव भारद्वाज, डॉ. अमित ... डॉ. गरूदत्त, राजीव ...

बापू से जुड़े फोटोग्राफ्स पर जमी निगाहें

- जमनालाल बजाज फाउंडेशन और शब्दम ने लगाई प्रदर्शनी

चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन करती छात्राएं।

सिरसागंज, निज प्रतिनिधि: जमना लाल बजाज फाउंडेशन ने शब्दम के सहयोग से नगर के राजकीय महिला महाविद्यालय और ब्राइट स्कालर्स एकेडमी में चित्र प्रदर्शनी का आयोजन गांधी जयंती पखवाड़ा के अंतर्गत किया।

प्रदर्शनी के अंतर्गत बालिकाओं और कालेज स्टाफ ने बापू के जीवन की तस्वीरों को देखकर उनके जीवन के बारे में जाना। प्रदर्शनी में जीवन से जुड़े तमाम प्रसंगों के चित्र शामिल थे। कई ऐतिहासिक भी थे। कुछ दुलर्भ चित्रों में गांधी विशेष भूमिका में ... लिये। कालेज की

के आयोजन के लिये जेबीएफ और शब्दम की अध्यक्ष किरण बजाज का आभार प्रकट किया।

शब्दम सलाहकार समिति के सदस्य ने उद्घाटन भाषण से उक्त प्रदर्शनी का शुभारंभ किया। वहीं ...

जुड़े शशिकांत पांडे ने बापू के बारे में विस्तार से जानकारी दी। अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डा. आरपी शर्मा, डा. सरित लवानियां ने महात्मा गांधी के विषय में विचार रखे। वहीं संचालन कर रहे डा. संजीव भारद्वाज ने अतिथियों का स्वागत किया।

राष्ट्रीय एकता रैली निकाली

पर्यावरण मित्र और शब्दम संस्था के तत्वाधान में राष्ट्रीय एकता एवं सदभावना रैली निकाली गई, जिसमें बच्चों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया

हिन्दुस्तान संवाद

शिकोहाबाद

राष्ट्रीय एकता एवं सदभावना रैली में कई स्कूलों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। • हिन्दुस्तान

राष्ट्रीय एकता एवं सद्भावना रैली में नगर के गणमान्य लोगों के साथ कई स्कूलों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। इस दौरान उपस्थित जनसमूह ने एकता और सदभावना के नारे लगाए। रैली के समापन अवसर पर वक्ताओं ने राष्ट्रीय एकता और पर्यावरण संरक्षण पर प्रकाश डाला।

बजाज फाउण्डेशन की संस्था पर्यावरण मित्र और शब्दम की ओर से राष्ट्रीय एकता और सदभावना विषय पर एक रैली निकाली गई। सुबह आठ बजे हिन्द लैम्पस परिसर से स्कूली बच्चे और नगर के गणमान्य लोगों ने पैदल मार्च किया। स्कूली बच्चे हाथ में पर्यावरण एवं ... संरक्षण, भ्रष्टाचार उन्मूलन, सफाई, ...

लिए थे। छात्राओं के हाथ में कन्या भ्रूण हत्या के विरोध में स्लोगन लिखी तख्तियां थी। रैली में ज्ञानदीप सीनियर सैकेण्ड्री पब्लिक स्कूल, न्यू मार्डेनिया जू0हा0, राज कान्वेन्ट स्कूल, पालीवाल डिग्री कालेज, बीडीएम कन्या विधालय के एनएसएस एवं एनसीसी कैडेट थे।

शिवा पर्यावरण कृषि एवं महिला उत्थान सेवा समिति और पतान्जलि योग समिति ने भी रैली में भाग लिया। रैली स्टेशन मार्ग होते नारायण इण्टर कालेज ग्राउण्ड में पहुंची। यहां कई वक्ताओं ने रैली को संबोधित किया। जिसमें डॉ. रजनी यादव, डॉ. ओपी सिंह, डॉ. जेपी एस

द्विवेदी, मंजर उलवासे, ... शशीकान्त पाण्डेय, अभय ... प्रमुख थे। कार्यक्रम में ... गुप्ता, महेश आलोक, ... पीएस. राना, डॉ. अजय ... बृजेश भारद्वाज, विनीता ... मणिकांचन का विशेष ...

राष्ट्रीय एकता एवं सद्भावना महारैली निकाली

हरी झण्डी दिखाकर रैली को रवाना करते हुए हिन्द लैम्प के महाप्रबन्धक व डा.रजनी यादव। फोटो: अकिंचन भार...

शब्दम ने निकाली राष्ट्रीय एकता एवं सद्भावना यात्रा

शिकोहाबाद। हिन्द लैम्प्स द्वारा संचालित पर्यावरण मित्र एवं शब्दम् के तत्वाधान में विभिन्न स्कूलों के सहियोग से एक भव्य रैली का आयोजन हिन्द आवासीय कालोनी से नारायण कालेज तक किया गया।

इस पदयात्रा का शुभारम्भ हिन्द आवासीय कालोनी से हिन्द लैम्प्स के महाप्रबन्धक पीके. धवन एवं ज्ञान दीप की निर्देशिक डा. रजनी यादव ने हरी झण्डी दिखाकर किया। पदयात्रा में ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल के बच्चे, विवेकानंद विद्यापीठ के छात्र, पालीवाल डिग्री कालेज, बीडीएम महाविद्यालय, राज कान्वेन्ट स्कूल, न्यू माडेनिया स्कूल, मधु माहेश्वरी विद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया। रैली में छात्र तख्तियों पर नारे देश की ताकत नौजवान, देश की किस्मत नौजवान, देश की हिम्मत नौजवान, हिन्दुस्तान जिंदाबाद भारत माता की जय, वन्दे मातरम जैसे नारे लिखे हुए थे। पद यात्रा में महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस, बाल गंगाधर तिलक, जवाहर लाल नेहरू, भीमराव अम्बेडकर के प्रसिद्ध स्लोगन लिखे हुए थे। पदयात्रा का समापन नारायण इंटर कालेज के क्रीडास्थल मे हुआ। समापन पर पालीवाल डिग्री कालेज के प्राचार्य डा. ओपी. सिंह ने कहा कि वर्तमान पीढ़ी के ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में प्रयोग करने एवं राष्ट्र निर्माण के क्षेत्र में आ रही समस्याओं को अवगत कराने उसका संदेश आम जनता को देने के लिए एवं राष्ट्रीय चेतना जगाने के लिए इस रैली का आयोजन किया गया। नारायण डिग्री कालेज के प्राचार्य डा. जेएस. द्विवेदी ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से निश्चित ही दिशा मिलेगी। इस पदायात्रा में विद्याराम शर्मा, मंझर उलवासी, डा. महेश आलोक, मुकेश मणकांचन, अनु सिशोधिया, बृजेश सारस्वत ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में मुख्य रूप से बीडीएम की प्राचार्या पदमा शर्मा, विनीता सक्सेना, डा. बृजेश भारद्वाज, रेखा गुप्ता, देवराज गुप्ता, गोपाल सिंह, केडी. दीक्षित उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम संयोजक शशिकांत पाण्डेय ने किया।

गीतिका बजाज की नवीनतम चित्र–प्रदर्शनी 'शेड्स ऑफ नेचर' २ से १० अक्तूबर २०१० तक जहांगीर आर्ट गैलरी, मुम्बई में आयोजित हुई। उद्घाटन सुप्रसिद्ध चित्रकार श्रीमती प्रफुल्ला डहाणुकर ने किया। महानगर तथा महाराष्ट्र के अन्य नगरों के कलाप्रेमियों ने तथा संचार माध्यमों ने चित्रों की बहुत सराहना की। इसके पूर्व गीतिका के चित्रों की प्रदर्शनी 'लीफ कलेक्शन' २४ व २५ अक्तूबर २००२ को कमलनयन बजाज आर्ट गैलरी, मुम्बई में आयोजित हुई थी। इसे भी दर्शकों की प्रशंसा प्राप्त हुई थी।

चित्रकार गीतिका बजाज

प्रसिद्ध उद्योगपति व कलाप्रेमी हर्ष गोयन्का

सुप्रसिद्ध चित्रकार प्रफुल्ला डहाणुकर द्वारा चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन

गीतिका अपने मार्गदर्शकों – शिल्पा वेळकर (बाएं) व रत्ना जयकर (दाएं) के साथ

Afternoon Tuesday Octber 5, 2010

BRUSH WITH ART | ADC |

Painting by Geetika Bajaj

'Shades of Nature' – paintings by Geetika Bajaj at Jehangir

Geetika Bajaj who is exhibiting her paintings from today at the Jehangir Art Gallery says: "I paint with my heart and for the soul. My paintings are not complex and depict our oneness with nature."

Geetika captures the moods of nature in her paintings which have all bright colours. She is a self-made artists. As many as 60 paintings by the artist are on view at the gallery.

It is only during the last 7 to 8 years, she began taking serious interest in painting. What inspired her to paint is nature and its simplicity. The splendour of nature is everywhere – be it a glorious sunset or a single bloom in a pot plant or even the majestic sea that runs alongside a busy traffic congested road on Marine Drive. You can see the beauty and splendour of nature everywhere. "I choose to see it in my day to day life and was inspired to transfer my observation on canvas. To me it is like splashing some beautiful colours on a blank canvas."

For Geetika, everyday is a learning experience. Over the years, there has been a change in her style and preference of shades and shapes – but her underlying love for painting nature has remained.

The artist always had big family support. "My mother is an environmentalist and does tremendous work at grassroot level. While I create nature on canvas, she creates nature on soil. We are a good team. My father has been my biggest critic and admirer. He helps with all the logistics around holding an exhibition and also encourages me to paint all the time."

Her next theme for an exhibition is the rose. "As a flower, it has evoked thousands of emotions for hundreds of years. The rose is a very powerful icon."

The exhibition at the Jehangir Art Gallery will go on till October 10. Contact: 022-22043780/ 22182139.

कलाकृतियों के बीच (बांए से) किरण बजाज, प्रफुल्ला डहाणुकर, गीतिका–शेखर–पूजा–अनंत बजाज

'Everyday is a learning experience for me'

Artist **Geetika Bajaj** talks to *After Hrs* about her evolution as an artist

After Hrs Correspondent

Geetika Bajaj and (right) one of her artworks

How long have you been painting?
I have been learning to paint for 20 years now but it has been a serious hobby since the past 8 years.

***Shades of Nature* is your second exhibition after a long gap. How have you evolved as a painter in this exhibition?**
Everyday is a learning experience for me. So over the years, there has been a change in my style and preference of shades and shapes, but my underlying love for painting nature has remained intact.

What do you think of the current art scene?
I am not a trained artist but we have people coming out of art schools who have done some incredible work. I am inspired by the works of Lalita Lajmi and Prafulla Dahanukar.

Who, according to you, are today's leading painters?
Suhas Bahulkar, Prafulla Dahanukar, Fatima Ahmed, Shakeel Momim, Samir Mondal and Paresh Maiti to name a few.

You haven't had any formal education in art yet you have come up with two exhibitions. So what were the challenges?
You have to be born with a flair for painting, only then can you hone it and fine tune it in an art school. If you have the talent and the passion to put your thoughts on a canvas, then you can do it without any formal training. My challenge is that I sometimes get distracted by other activities and then there is a huge gap in my painting schedule.

What is your next theme?
The 'rose'. As a flower, it has evoked thousands of emotions for hundreds of years. It is a very powerful icon and I am exploring this right now as a theme. I like to paint aspects of nature. Even if I paint for the next thirty years, I wont run out of themes borrowed from Mother Nature.

What role has your family played in supporting you as an artist?
My family has been my biggest support. My mother is an environmentalist and does tremendous work at the grassroots level. While I create nature on canvas, she creates nature on soil. We are a good team. My father has been my biggest critic and admirer.

Tell us a bit about your various teachers and how have you matured as an artist?
My teachers have been my friends, philosophers and guides. They have taught me to enjoy and appreciate the essence of art.

What do you see in your future as an artist?
I am not a professional painter so I paint sporadically. There are months when I don't create much and then I paint non-stop for weeks together so I expect the same pattern in the future as well.

(Geetika Bajaj's exhibition, *Shades of Nature* will be showcased at the Jehangir Art Gallery 3 till 10th October between 11am and 7pm.)

बांए से– आदित्य स्वामी, दीपा–गीतिका–राजीवनयन बजाज, सुनयना केजरीवाल, नीलिमा स्वामी, आर्यमन केजरीवाल,मनीष केजरीवाल व किरण बजाज

बांए से– सुमन जैन, प्रफुल्ला डहाणुकर, गीतिका व अनीता अग्रवाल(हैदराबाद)

संजीवनयन बजाज के साथ गीतिका

ओम प्रकाश धानुका (कोलकाता) प्रो. नन्दलाल पाठक व किरण बजाज

बिनीता पित्ती (हैदराबाद) गीतिका को बधाई देती हुईं

मिनल बजाज गीतिका के साथ

चंद्र धानुका (कोलकाता) गीतिका व किरण बजाज के साथ

मनसे नेता राज ठाकरे

कुमुद बजाज गीतिका के साथ

हिन्दी के लिए हम क्या कर सकते हैं

- हिन्दी को देश–विदेश में राष्ट्रभाषा का पूर्ण सम्मान दें।
- हम परस्पर व्यवहार में हिन्दी का प्रयोग करें।
- अपने गाँव एवं शहर में हिन्दी साहित्य की विभिन्न गतिविधियों को प्रोत्साहन दें।
- अपने कारोबार में हिन्दी भाषा को सम्मान और स्थान दें।
- हिन्दी शिक्षकों, लेखकों, कवियों, रचनाकारों, कलाकारों को उचित सम्मान दें।
- हिन्दी पुस्तकों की प्रदर्शनी, वाचनालय, मुद्रण, विक्रय को बढ़ावा दें।
- विश्व के उत्कृष्ट साहित्य का अनुवाद हिन्दी में एवं हिन्दी साहित्य का अनुवाद अन्य भारतीय भाषाओं तथा विदेशी भाषाओं में कराने में सहयोग करें।

शुरुआत अपने घर से करें

- अपने परिवार में हिन्दी के ज्ञान को समृद्ध करें।
- बच्चों में हिन्दी के प्रति सम्मान और जिज्ञासा पैदा करें।
- बच्चों के विद्यालय की हिन्दी गतिविधियों में सहयोग दें।
- हिन्दी की पत्र–पत्रिकाओं और संस्थाओं से जुड़ें।

सौजन्य:
बजाज
बजाज इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड
विश्वास की प्रेरणा